आज़ादी का अमृत महोत्सव

दिल्ली बैंक नराकास की छमाही पत्रिका

बैंक भारती

अंक 28, जुलाई–दिसम्बर, 2022

राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

: संयोजक :

पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक!

punjab national bank
...the name you can BANK upon!

दिल्ली बैंक नराकास को "राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार"

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, इंडोर स्टेडियम, सूरत में आयोजित राजभाषा समारोह में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह, गृह राज्यमंत्री, श्री निशिथ प्रामाणिक, श्री अजय कुमार मिश्रा, श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश, रेल राज्य मंत्री एवं वस्त्र मंत्री आदि गणमान्य अतिथियों की गरिमामय उपस्थिति में वित्त वर्ष 2021–2022 के लिए "राजभाषा कीर्ति" प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए दिल्ली (बैंक) नराकास के अध्यक्ष एवं अंचल प्रबंधक, श्री समीर बाजपेयी।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, इंडोर स्टेडियम, सूरत में आयोजित राजभाषा समारोह में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह, गृह राज्यमंत्री, श्री निशिथ प्रामाणिक, श्री अजय कुमार मिश्रा, श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश, रेल राज्य मंत्री एवं वस्त्र मंत्री आदि गणमान्य अतिथियों की गरिमामय उपस्थिति में वित्त वर्ष 2021–2022 के लिए "राजभाषा कीर्ति" प्रथम पुरस्कार का प्रमाणपत्र ग्रहण करते हुए दिल्ली बैंक नराकास की सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), श्रीमती मनीषा शर्मा।

बैंक भारती

दिल्ली बैंक नराकास | छमाही पत्रिका

वर्ष : 25 | अंक : 28 | जुलाई–दिसम्बर, 2022

संरक्षक

समीर बाजपेयी

अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास
एवं मुख्य महाप्रबंधक, दिल्ली अंचल, पंजाब नैशनल बैंक

सम्पादक

मनीषा शर्मा

सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास
एवं सहायक महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक

सम्पादकीय समिति

बलदेव कुमार मल्होत्रा

मुख्य प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक

राजीव शर्मा

वरिष्ठ प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक

परामर्शदात्री समिति

रंजन कुमार बरून	उप महाप्रबंधक	राष्ट्रीय आवास बैंक
कुमार परिमलेंदु सिन्हा	उप महाप्रबंधक	भारतीय रिजर्व बैंक
अजय मेहरोत्रा	सहायक महाप्रबंधक	आईएफसीआई लिमिटेड
अशोक कुमार तनेजा	मुख्य प्रबंधक	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सरताज मो. शकील	मुख्य प्रबंधक	बैंक ऑफ इंडिया

आवरण पृष्ठ बारे में ...

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 14 एवं 15 सितंबर 2022 को सूरत (गुजरात) में आयोजित **''हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन''** में श्री निशिथ प्रमाणिक, केंद्रीय गृह राज्यमंत्री से दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्राप्त **राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार** को ग्रहण करते हुए श्री समीर वाजपेयी, अध्यक्ष दिल्ली बैंक नराकास एवं मुख्य महाप्रबंधक दिल्ली अंचल।

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ सं.
1.	हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश	2
2.	अध्यक्ष की कलम से ...	4
3.	संपादकीय	5
4.	हिंदी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन–सूरत	6
5.	व्यवहार परिवर्तन का अर्थशास्त्र	7
6.	हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन	9
7.	5G नेटवक	10
8.	पेड़–कविता	12
9.	मेरा प्रिय क्रिकेट खिलाड़ी	13
10.	पीएनबी में हिंदी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन	14
11.	सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी पखवाड़े का आयोजन	15–17
12.	''आस्तियाँ''–कविता	17
13.	मुकुल सदन	18
14.	संस्कृति मूलक–कविता	19
15.	यह कैसी आज़ादी	20
16.	अपनी बातें	22
17.	दिल्ली बैंक नराकास की 56वीं छमाही बैठक	24–26
18.	धनतेरस दीपावली और आदिवासी समाज में परंपराएं	27
19.	प्रदूषण की समस्या–कविता	29
20.	महान आदिवासी नेता– जयपाल सिंह मुंडा	30
21.	राजभाषा गतिविधियाँ	32
22.	विमोचन	33
27.	एक दिन की बात	34
28.	बैंकिंग व्यवसाय में राजभाषा कितनी लाभकर	35
29.	जरुरी है–कविता	36
30.	दूल्हा बिकता है: दहेज–एक कुरीति	37
31.	सतर्कता दिवस	38
32.	डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती	38
33.	महिला और समानता का अधिकार	39
34.	चौखट पर आज...	40
35.	लोकल के लिए वोकल के मंत्र से देश की आर्थिक प्रगति	41
36.	जमना की सबसे बूढ़ी मछली–कविता	42
37.	''ऑनलाइन खरीदारी करते वक्त सोच–समझ कर क्लिक करें''	43
38.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	44
39.	दिल्ली बैंक नराकास शील्ड प्रतियोगिता वर्ष 2021–22 : परिणाम	45–48

–: सम्पर्क सूत्र :– बैंक भारती, दिल्ली बैंक नराकास सचिवालय, पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, प्लाट नं–4, प्रथम तल, द्वारका सेक्टर–10, नई दिल्ली–110075
ई–मेल : delhibanknarakas@pnb.co.in ♦ **दूरभाष** : 28044450, 28044491

मुद्रक :– **डॉल्फिन प्रिंटो–ग्राफिक्स**, 1ई/18, चौथी मंजिल, झंडेवालान, दिल्ली–110055 ♦ **ई–मेल:** dolphinprinto2011@gmail.com

पत्रिका में व्यक्त विचारों से 'समिति' का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश

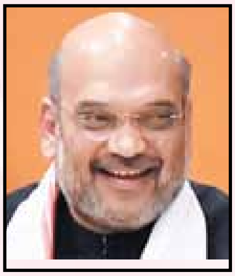

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो!

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आजादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आंदोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किये गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किये हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किये गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11वां खंड शीघ्र ही सौंपा

जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किये गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत् शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परम्परा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

अध्यक्ष की कलम से ...

प्रिय साथियो,

'बैंक भारती' के इस 28वें अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मन पुलकित है। दिल्ली बैंक नराकास के समस्त सदस्य कार्यालयों के प्रत्येक साथी को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2021–22 के लिए दिल्ली बैंक नराकास को प्रदत्त **''राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार''** की हार्दिक बधाई। यह उपलब्धि आप सभी के सम्मिलित सहयोग और मेहनत का ही प्रतिफल है। यह उपलब्धि नि:संदेह विशिष्ट है और देश की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के आजादी के अमृतकाल में प्राप्त इस पुरस्कार की प्रासंगिकता इसे अति विशिष्ट बना देती है।

साथियो, देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। अमृतकाल, आत्मनिर्भर और विकसित भारत के साथ–साथ सांस्कृतिक उत्थान को भी लक्षित करता है। हिंदी एवं सभी भारतीय भाषाएँ हमारे देश की पुरातन एवं महान संस्कृति की वाहक हैं। इनके उत्थान में हमारे देश का उत्थान निहित है। 14–15 सितंबर, 2022 को सूरत में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन और पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय गृह मंत्री, श्री अमित शाह जी के कथन का सार भी यही था कि राजभाषा अब केवल सरकारी कार्यालयों की प्रशासनिक भाषा न रहकर, ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान की उड़ान भरने वाली है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ आपस में प्रतिस्पर्धी नहीं अपितु एक–दूसरे की संगनी हैं।

दिल्ली बैंक नराकास को देश की प्रतिष्ठित नराकासों में प्रमुख स्थान प्राप्त है। इस स्थान की प्राप्ति आप सबके कड़े परिश्रम और सहयोग से ही संभव हो पायी है। नराकास की बैठकों और समस्त क्रियाकलापों के साथ–साथ राजभाषा संबंधी नित नए नवोन्मेषी कार्य और गतिविधियाँ इसे विशेष बनाती हैं। कोरोना महामारी के दौरान भी हमारी नराकास की बैठकों का आयोजन निर्बाध रूप से समय पर हुआ। हमने सभी सदस्य कार्यालयों की सहभागिता से संगोष्ठियों, हिंदी माह समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि का आयोजन किया, प्रतियोगिताएं भी आयोजित की। हमने दिल्ली पुलिस को सैनेटाइजर, मास्क आदि का वितरण कर कोरोना के खिलाफ युद्ध में अपना योगदान दिया और रिपोर्टों का प्रेषण तथा दिल्ली बैंक नराकास की छमाही पत्रिका **''बैंक भारती''** का भी समय से प्रकाशन किया। कहने का तात्पर्य यह है कि विषम परिस्थितियों में भी हमारी नराकास और उसकी गतिविधियां निर्बाध चली और यही कारण है कि हमारी नराकास की गिनती देश की प्रतिष्ठित नराकासों में की जाती है।

राजभाषा कीर्ति के प्रथम पुरस्कार की प्राप्ति से हमारा दायित्व और बढ़ गया है। हमें अपने लक्ष्यों को और बड़ा रखते हुए स्वयं से प्रतिस्पर्धा करनी है। हमें शिथिल नहीं होना है। मेरा मानना है कि इसमें सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। सभी कार्यालय प्रमुखों से मेरा आग्रह है कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें जिससे उनके अधीन कार्यरत स्टाफ प्रेरित होकर अपना समस्त कार्य हिंदी में करने की दिशा में अग्रसर होंगे। मैं स्वयं अपना सारा कार्य हिंदी में करता हूँ और सभी फाइलों पर टिप्पणियाँ केवल हिंदी में ही लिखता हूँ। मेरे इस छोटे से प्रयास मात्र से ही मेरे कार्यालय के साथ–साथ अधीनस्थ कार्यालयों से भी मेरे कार्यालय में आने वाला कार्य अधिकांशत: हिंदी में ही होता है।

''अमुक कार्य हिंदी में नहीं हो सकता'', इस प्रकार के वाक्यों से हम सबको अक्सर दो–चार होना पड़ता है मगर मेरा मानना है कि असंभव शब्द केवल उनके लिए है जिन्होंने प्रयास नहीं किया या नहीं करना चाहते। दिल्ली बैंक नराकास के सभी सदस्य इस शब्द से बहुत दूर हैं। जब हम संगठित होकर, टीम भावना से किसी कार्य को करने के लिए जुट जाते हैं तो दुष्कर भी श्रेयस्कर हो जाता है। हम सबको एक दूसरे के साथ मिलकर अपनी भाषा को बढ़ावा देना है। कार्यालयी कामकाज में केवल इसी का प्रयोग हो, ऐसा वातावरण तैयार करना है। भारतीय भाषाओं और तकनीक के समावेश से नए आयाम छूने हैं। मुझे विश्वास है कि हम यह सब कर सकते हैं और कर लेंगे।

इसी विश्वास के साथ, आप सबको एक बार पुन: **राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार** प्राप्त करने की बधाई और आगामी **नव–वर्ष 2023** के लिए आपको और आपके परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका

(समीर बाजपेयी)
अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास
एवं
मुख्य महाप्रबंधक
पंजाब नैशनल बैंक
दिल्ली अंचल

संपादकीय

प्रिय साथियो,

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पत्रिका **''बैंक भारती''** के इस 28वें अंक के माध्यम से आप सभी से पुनः संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के मार्ग–निर्देशन में राजभाषा कार्यान्वयन की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हुए 14 सितंबर, 2022 को सूरत में आयोजित दो दिवसीय हिंदी दिवस, 2022 एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने वित्तीय वर्ष 2021–22 हेतु राजभाषा का सर्वोच्च **''राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार''** प्राप्त किया है, जिस हेतु आप सभी सदस्य कार्यालयों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। इस उपलब्धि में प्रत्येक सदस्य कार्यालय ने राजभाषा कार्यान्वयन के प्रगामी प्रयोगों एवं नवोन्मेष के माध्यम से बहुमूल्य योगदान दिया है, जिसके कारण यह संभव हुआ है। इस हेतु दिल्ली बैंक नराकास आप सभी का आभार व्यक्त करता है।

अब हम सभी की यह दोहरी ज़िम्मेदारी है कि इस उपलब्धि को बनाए रखने के साथ–साथ एक बार फिर नई ऊर्जा एवं प्रयासों से राजभाषा कार्यान्वयन को एक नया आयाम दें ताकि दिल्ली बैंक नराकास पुनः अग्रणी रहते हुए नए कीर्तिमान स्थापित करे। इसके लिए हम सभी को नवोन्मेषी गतिविधियों में सक्रियता के माध्यम से सृजनशील रहना होगा।

आजादी के इस अमृत महोत्सव काल में राजभाषा हिंदी का स्वर्णिम काल चल रहा है। सरकार द्वारा राजभाषा के गौरव को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने हेतु ठोस कदम उठाए गए हैं। दिल्ली बैंक नराकास ने भी ऑनलाईन सहित अन्य वैकल्पिक माध्यमों से नवोन्मेषी गतिविधियों को निरंतर बनाए रखा है। इसमें समस्त सदस्य कार्यालयों के उच्चाधिकारियों एवं प्रतिभागियों की उत्साहपूर्ण भूमिका निश्चय ही सराहनीय है। यह अत्यंत सुखद है कि आप सभी के अनन्य सहयोग से ही दिल्ली बैंक नराकास को देश के सर्वश्रेष्ठ नराकास के रूप में पुरस्कृत किया गया है।

सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों की बहुमुखी रचनात्मक प्रतिभाओं से परिपूर्ण तथा राजभाषा गतिविधियों एवं उपलब्धियों से भरपूर **बैंक भारती** का नूतन अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। आशा है कि आप सभी को हृदय को छूने वाली रचनाओं एवं महत्वपूर्ण राजभाषा गतिविधियों से सुसज्जित पत्रिका का यह अंक बेहद पसंद आएगा। सदस्यों के नवोन्मेषी प्रयोग, अमूल्य सहयोग एवं प्रतिबद्धता से मुझे पूर्ण विश्वास है कि दिल्ली बैंक नराकास राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में नित नए कीर्तिमान स्थापित करेगा।

आप सभी के असीम सहयोग से पत्रिका का आगामी अंक और भी उत्कृष्ट होगा, इसी आशा एवं अपेक्षा के साथ...

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(मनीषा शर्मा)
सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास एवं
सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा

हिंदी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन–सूरत

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत (गुजरात) में अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण करते हुए माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 14 एवं 15 सितंबर 2022 को सूरत (गुजरात) में ''हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन'' का आयोजन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री, श्री भूपेंद्र भाई पटेल, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री नित्यानंद राय, श्री अजय कुमार मिश्रा, श्री निशिथ प्रामाणिक, रेल राज्य मंत्री एवं वस्त्र राज्य मंत्री, श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश, और सांसदगण तथा सचिव, राजभाषा, श्रीमती अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव सुश्री मीनाक्षी जौली एवं हिंदी के विद्वान विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने अनुवाद कार्य को सरल बनाने हेतु स्मृति आधारित अनुवाद टूल के उन्नत संस्करण ''कंठस्थ 2.0'' और हिंदी से हिंदी बृहत शब्दकोश ''हिंदी शब्द सिंधु (संस्करण–1) का लोकार्पण किया। दिल्ली बैंक नराकास को प्रथम कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसे दिल्ली बैंक नराकास अध्यक्ष एवं अंचल प्रबंधक दिल्ली, श्री समीर बाजपेयी ने प्राप्त किया।

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत (गुजरात) में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के साथ एमडी एवं सीईओ श्री अतुल कुमार गोयल, अंचल प्रबंधक, दिल्ली एवं मुख्य ,महाप्रबंधक, श्री समीर वाजपेयी, महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री देवार्चन साहू, श्रीमती मनीषा शर्मा सहायक महाप्रबंधक तथा अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री बिनय कुमार गुप्ता।

व्यवहार परिवर्तन का अर्थशास्त्र

विष्णु कान्त शर्मा
पंजाब नैशनल बैंक,
प्रधान कार्यालय

कोविड–19 की अभूतपूर्व घटना से पूर्व भारत में यदि कोई व्यक्ति मेट्रो, लिफ्ट आदि में मास्क पहनकर रखता था तो उपस्थित लोगों में दो तरह के भाव उत्पन्न होते थे। पहला या तो बाहर प्रदूषण की गंभीर स्थिति है या व्यक्ति को कोई स्वास्थ्य समस्या है। लेकिन कोरोना वायरस ने हमारी जीवन शैली को इतना प्रभावित किया है कि मास्क लगाना/हैण्ड सैनेटाइजर का उपयोग अब सामान्य बात हो गई है। इस संबंध में स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार ने स्पष्ट कर दिया कि हमें कोविड–19 वायरस के साथ जीना सीखना होगा। इसके लिए हमें अपने दैनिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा। आर्थिक दृष्टि से देखें तो लॉकडाउन और कई प्रतिबंधों के हटने के बाद अर्थव्यवस्था की स्थिति में भी सुधार है। माननीय प्रधानमंत्री ने भी देश के नाम अपने संबोधन में कहा है कि हमें आपदा को अवसर के रूप में बदलना होगा और अपने व्यवहार में परिवर्तन लाकर भारत को आत्मनिर्भर बनाना होगा। इसके लिए सरकार ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जनता के व्यवहार में परिवर्तन कर अर्थव्यवस्था में सुधार करने वाले व्यावहारिक अर्थशास्त्र के सिद्धांत को चुना है।

अब मूल प्रश्न पर आते हैं कि क्या सरकार के निर्देशों का अनुसरण कर जनता के व्यवहार में परिवर्तन करके भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया जा सकता है, उत्तर है हाँ। ना केवल ऐसा संभव है अपितु भारत, ब्रिटेन सहित कई देश ऐसा कर रहे हैं। अर्थशास्त्र की भाषा में इसे व्यावहारिक अर्थशास्त्र कहते हैं। व्यावहारिक अर्थशास्त्र पर वर्ष 2017 में अर्थशास्त्री रिचर्ड थेलर को नोबेल पुरस्कार मिला था। इस सिद्धांत को **नज सिद्धान्त** कहा जाता है, नज अर्थात सौम्य धक्का। 2010 में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार की फिजूलखर्ची पर अनुशासन रखने के लिए एक नज यूनिट बनाई थी। रिचर्ड को नोबेल पुरस्कार मिलने के बाद से व्यावहारिक अर्थशास्त्र की अवधारणा पर अधिक चर्चा होने लगी है। रिचर्ड थेलर ने 2016 में भारत सरकार के विमुद्रीकरण (नोटबंदी) के फैसले का भी समर्थन किया था।

सरल भाषा में व्यावहारिक अर्थशास्त्र और नज सिद्धांत को समझे तो यह सिद्धांत मनोविज्ञान एवं अर्थशास्त्र के संयोजन के रूप में कार्य करता है तथा लोगों के व्यवहार का अध्ययन करके यह समझने का प्रयास करता है कि भिन्न–भिन्न लोग समान परिस्थिति में अपने लिये भिन्न आर्थिक फैसले क्यों लेते हैं? व्यावहारिक अर्थशास्त्र का मानना है कि लोगों के फैसले न सिर्फ उनकी तर्कशक्ति बल्कि अन्य कारकों जैसे– भावनाओं, मनोवृत्ति परिवर्तन, परिस्थिति आदि से भी प्रभावित होते हैं। जैसे मॉल में आप खरीदने कुछ जाते हैं और बाजारवाद की चकाचौंध में उस कुछ के साथ बहुत कुछ खरीदकर ले आते हैं। इन पर उक्तियुक्त सौम्य अनुशासन लगाकर इन खर्चों को अन्य मदों में निवेश के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। ओईसीडी (OECD) के अनुसार, विश्व में 200 से भी अधिक सरकारी संस्थान व्यावहारिक अर्थशास्त्र का उपयोग कर रही हैं।

भारत के आर्थिक सर्वेक्षण 2019 में भी व्यावहारिक अर्थशास्त्र का उल्लेख किया गया है। भारत में अब तक इस अवधारणा का उपयोग केवल सामाजिक बदलाव के लिये किया गया है किंतु अब यह सिद्धांत भारत की अर्थव्यवस्था को वर्ष 2024–25 तक 5 ट्रिलियन डॉलर के स्तर तक पहुँचाने के साथ–साथ कोविड–19 से उपजे आर्थिक हालात से उबरने में सहायक हो सकता है। इस कार्य में सरकार लोगों को समय–समय पर जागरूक कर सकती है कि अमुक कार्य करने से आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी और अर्थव्यवस्था के साथ पर्यावरण को भी लाभ होगा इत्यादि। कोरोना वायरस से उपजी कुछ आदतों ने हमारे सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन ला दिया है। जो अच्छा व्यवहार हमारे लिए अपनाना मुश्किल था अब वह व्यवहार सरकार द्वारा

लागू किए जाने वाले सौम्य अनुशासन से बदल गया है। उदाहरण के लिए खाने से पहले और शौच के बाद हाथ धोने के स्वच्छता अभियान को कई वर्षों से चलाया जा रहा है किन्तु महामारी में हुए अनुभवों के कारण अब सभी लोगों ने समय–समय पर हाथों को सैनेटाईज करने या साबुन से धुलने के नियम को अपने व्यवहार में शामिल कर लिया है। हाथ मिलाने की परंपरा को पारंपरिक व्यवहार 'नमस्ते' तक सीमित किया है। चेहरे को मास्क से ढकने को व्यवहार में ला दिया है।

भारत सरकार ने व्यावहारिक अर्थशास्त्र के सिद्धांत का उपयोग लॉकडाउन से पूर्व भी किया है। ऐसी योजनाओं में सरकार द्वारा अग्रसक्रिय प्रचार करके जनता को इसका उद्देश्य स्पष्ट करना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए स्वच्छ भारत अभियान, जिसकी सफलता बताती है कि लोगों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन करके अविश्वसनीय उपलब्धि भी हासिल की जा सकती है। स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत देश में रिकॉर्ड 11 करोड़ से ज्यादा शौचालयों का निर्माण हुआ परिणाम स्वरूप 2014 से पहले जहाँ ग्रामीण स्वच्छता का दायरा 40 प्रतिशत से भी कम था वो बढ़कर करीब–करीब 100 प्रतिशत तक पहुँच गया है। इसके अतिरिक्त यूनिसेफ (UNICEF) की एक स्टडी में कहा गया है कि इससे ग्राउंड वॉटर की क्वॉलिटी में भी बहुत सुधार हुआ है। स्वच्छ भारत मिशन अभियान के दौरान बनाए गए 11 करोड़ से ज्यादा शौचालयों ने ग्रामीण स्तर पर इकोनॉमिक एक्टिविटी अर्थात ग्रामीणों के लिए रोजगार के नए द्वार भी खोल दिए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार खुले में शौच करने, दूषित जल और इससे उत्पन्न अन्य बैक्टीरिया जनित डायरिया आदि बीमारियों से लगभग 3 लाख जिंदगियों को बचाने की संभावना बनी है। इसके लिए प्रधानमंत्री को बिल एवं मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन की ओर से 'ग्लोबल गोलकीपर्स अवॉर्ड' पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

ऐसी कई योजनाएँ हैं जो भारत में व्यावहारिक अर्थशास्त्र की सफलता को रेखांकित करती हैं, जैसे बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ के माध्यम से लिंगानुपात में वृद्धि दर हासिल करने की सफलता हो या स्वैच्छिक एलपीजी सब्सिडी छोड़कर 8 करोड़ गरीब महिलाओं को मुफ्त गैस प्रदान कर जनभागीदारी सुनिश्चित करना। सरकार ने विमुद्रीकरण के फैसले के दौरान जनता की नकद लेन–देन की प्रवृत्ति को बदलने के लिए कैशलेस लेन–देन को प्रोत्साहित किया। अब यह प्रवृत्ति धीरे–धीरे आदत बन गई है और कैशलेस लेन–देन में अप्रत्याशित बढ़ोतरी देखने को मिली है। भारत अब यूपीआई के माध्यम से सबसे ज्यादा ऑनलाइन लेन–देन करने वाला पहला देश बन गया है। अब इसका लाभ व्यापारी से लेकर मजदूरों तक को मिल रहा है। व्यावहारिक अर्थशास्त्र के अनुसार जनता में जनभागीदारी का मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालकर उनके व्यवहार में परिवर्तन करना आवश्यक है। इससे जनता में राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का भाव बढ़ता है।

उपर्युक्त योजनाओं की सफलता से प्रभावित होकर आर्थिक सर्वेक्षण में व्यावहारिक अर्थव्यवस्था के सिद्धांत को भारत में लैंगिक असमानता को कम करने, भारत के लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति को सुधारने, लोगों की बचत करने की आदत को बढ़ावा देने, कर चुकाने की मनोवृत्ति विकसित करने में भी उपयोग करने का विचार प्रस्तुत किया गया है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी को जनता के व्यवहार और विचार में परिवर्तन लाकर किसी छोटे आंदोलन को व्यापक जन आंदोलन में परिवर्तित करने में महारत हासिल थी। वे निरंतर लोगों में ये भाव पैदा करते हैं कि वे देश और देशवासियों के लिए कार्य कर रहे हैं। स्वच्छ और रोगमुक्त भारत गांधीजी का ही सपना था और स्वच्छ भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उनकी नीति का ही अनुपालन किया गया।

गाँधीजी का एक और सपना था स्वदेशी अपनाने वाला आत्मनिर्भर भारत जिसे प्रधानमंत्री ने वोकल फॉर लोकल शब्द के माध्यम से दोहराया है। गाँधीजी का मानना था कि विदेशी मशीन या वस्तुएं आयात करने से अच्छा है हम उस वस्तु का उत्पादन अपने देश में करें। गाँधी जी का यह कथन आज भारत को 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था तक पहुँचाने में प्रासंगिक है। ऐसा संभव भी है। इसका उदाहरण कोरोना महामारी के दौरान देखने को भी मिला जैसे महामारी से पूर्व भारत में एन–95 मास्क नाम मात्र बनता था और पीपीई (व्यक्तिगत सुरक्षा परिधान) किट बनते ही नहीं थे। आज हम इनके उत्पादन में विश्व में दूसरे नंबर पर हैं। यह उपलब्धि भारत ने केवल 2 महीने में हासिल की है। इसे ही स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत कह सकते हैं। गाँधीजी का मानना था कि भारत की आर्थिक प्रगति उसके पारंपरिक उद्योग, शिल्प और पद्धति द्वारा की जा सकती है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री द्वारा वोकल फॉर लोकल (स्थानीयता को मुखरता) को भी एक जन आंदोलन बनाने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें जन

सामान्य की भागीदारी अनिवार्य होगी। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गाँधीजी की इसी बात का अनुसरण करते हुए 2018 में एक जनपद–एक उत्पाद की शुरुआत की गई जिसमें प्रत्येक जिले के लिए उसका पारंपरिक शिल्प निर्धारित है जैसे गौतम बुद्ध नगर (नोएडा) के लिए रेडीमेड गारमेंट्स और भदोही का कालीन उद्योग। ये उद्योग स्थानीय लोगों द्वारा किए जाते हैं। इन लघु उद्योगों को सरकार द्वारा ऋण तथा राहत पैकेज की सुविधा मिलने वाली है। ऐसी सहायता मिलने पर इनमें स्थानीय लोगों को रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। अब देशवासियों का यह दायित्व है कि वे स्वदेशी उत्पादों को अपनाकर स्थानीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के लिए माँग पैदा करें।

पिछले कुछ वर्षों में देशवासियों के व्यवहार में परिवर्तन देखा गया है इसका कारण सरकार का निरंतर जनता से संवाद जो जनता को भावनात्मक रूप से सरकार पर विश्वास बनाए रखने देता है। अपने व्यवहार में हमें सरकार के निर्देशों के अनुसार परिवर्तन करना होगा। क्या देश के आर्थिक विकास के लिए हम इतना नहीं कर सकते? हम दैनिक उपयोग की लगभग हर वस्तु जो भारत में निर्मित है उसे खरीद सकते हैं। एक कपड़ा खादी का तो अवश्य ही रख सकते हैं। हम केवल व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से भारत को स्वदेशी उत्पादों में आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर सकते हैं।

❑❑❑

हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

आईआईएफसीएल द्वारा आयोजित हिंदी प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करते हुए प्रतिभागीगण।

आईआईएफसीएल द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित हिंदी प्रतियोगिता में सहभागिता करते हुए स्टाफ सदस्य।

हिंदी माह के दौरान पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिण दिल्ली द्वारा आयोजित हिंदी प्रतियोगिता में सहभागिता करते हुए स्टाफ सदस्य।

दिल्ली बैंक नराकास के तत्वाधान में इंडियन बैंक, दिल्ली दक्षिण द्वारा आयोजित 'सामान्य ज्ञान क्विज प्रतियोगिता' (वस्तुनिष्ठ) में सहभागिता करते हुए प्रतिभागीगण।

5G नेटवक

नेहा अग्रवाल
वरिष्ठ प्रबंधक(आई टी)
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
आंचलिक कार्यालय, दिल्ली

आज के समय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो इंटरनेट का इस्तेमाल ना करता हो। हमारे भारत देश में पहले के मुकाबले अब गाँव में रहने वाले लोग भी इंटरनेट का इस्तेमाल करने लगे हैं। हमारे देश की सरकार ने भी भारत को **डिजिटल इंडिया** का नाम दिया है। वर्तमान समय में हम 4G तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और अब आगे हम 5G तकनीक की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हाल ही में दूरसंचार विभाग (DoT) ने घोषणा की है कि भारत के प्रमुख महानगरों में 5G सेवाएँ संचालित होंगी।

भारत की राष्ट्रीय डिजिटल संचार नीति 2018 में 5जी के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है, इसमें कहा गया है, कि 5जी क्लाउड, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) और डेटा एनालिटिक्स सहित क्रांतिकारी प्रौद्योगिकियों का एक समूह है जो बढ़ते स्टार्ट–अप समुदाय के साथ अवसरों का नया क्षितिज खोलता है और डिजिटल जुड़ाव को अधिक तीव्र तथा मजबूत करता है।

5G में 'G' का अर्थ क्या है?

1G से लेकर 5G तक "G" का तात्पर्य जनरेशन से होता है, जनरेशन यानी की पीढ़ी। हम जिस भी पीढ़ी की टेक्नोलॉजी इस्तेमाल कर रहे होते हैं, उसके आगे "G" लग जाता है और यही "G" आधुनिक तकनीक के उपकरण को नई पीढ़ी के रूप में दर्शाने का कार्य करता है। हमारा देश धीरे–धीरे नई तकनीक की ओर अग्रसर होता जा रहा है और हमारे देश में भी नई–नई तकनीकों का निर्माण किया जा रहा है।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी क्या है ?

- 5G नेटवर्क मोबाइल संचार की आने वाली पीढ़ी है, जिसकी गति और क्षमता हमारे वर्तमान 4जी से 100 गुणा तेज होगी।
- 5G की टेक्नोलॉजी दूरसंचार की टेक्नोलॉजी से संबंध रखती है। दूरसंचार की इस नई तकनीक में रेडियो तरंगें और विभिन्न तरह की रेडियो आवृत्ति का इस्तेमाल किया जाता है।
- अब तक जितने भी टेक्नोलॉजी दूरसंचार के क्षेत्र में आ चुके हैं, उनके मुकाबले में यह तकनीक काफी नई और तीव्रता से कार्य करने वाली तकनीक है।
- इस नवीन तकनीक का निर्धारण आईटीयू यानी कि इंटरनेशनल टेलीकम्युनिकेशन यूनियन के हाथों किया जाता है।
- 5G की तकनीक 4G तकनीक के मुकाबले नेक्स्ट जनरेशन की तकनीक है और यह अब तक आ चुकी सभी तकनीक से सबसे ज्यादा आधुनिक तकनीक मानी जा रही है।
- 5G और 4G के बीच महत्वपूर्ण अंतर यह है कि जहाँ 4G नेटवर्क मुख्य रूप से क्षमता पर केंद्रित होते हैं, वहीं 5G नेटवर्क क्षमता और विलंबता या गति दोनों पर आधारित होगी।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी के फायदे

- इस नई तकनीक की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी सहायता से ऑटोमोबाइल के जगत में औद्योगिक उपकरण एवं संसाधन यूटिलिटी मशीन संचार एवं आंतरिक सुरक्षा भी पहले के मुकाबले और विकसित एवं बेहतर होने के साथ–साथ इनके बीच में संबद्धता की वृद्धि होगी।
- 5G तकनीक सुपर हाई स्पीड इंटरनेट की कनेक्टिविटी प्रदान करने के साथ–साथ यह कई महत्वपूर्ण स्थानों में उपयोग में लाया जाएगा। इस टेक्नोलॉजी के आ जाने से कनेक्टिविटी में और भी ज्यादा विकास एवं शुद्धता प्राप्त होगी।
- 5G तकनीक की वजह से ड्राइवरलेस कार, हेल्थ केयर, वर्चुअल रियालिटी, क्लाउड गेमिंग के क्षेत्र में नए–नए विकासशील रास्ते खुलते चले जाएंगे।

- क्वॉलिकम के अनुसार अभी तक 5G की तकनीक ने करीब 13.1 ट्रिलियन डॉलर ग्लोबल इकोनॉमी को आउटपुट प्रदान कर दिया है। इसकी वजह से दुनिया भर में करीब 22.8 मिलियन के नए जॉब अवसर विकसित हो रहे हैं।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी की विशेषताएं–

- **5G नेटवर्क की स्पीड**

  इस नई तकनीक की स्पीड करीब एक सेकंड में 20GB के आधार पर इसके उपभोक्ताओं को प्राप्त होगी। इस तकनीक के आ जाने से टेक्नोलॉजी से जुड़े हुए सभी कार्यों में तेजी से विकास होगा और सभी कार्य आसानी से काफी तेज गति में किए जा सकेंगे।
- **इंटरनेट स्पीड में वृद्धि**

  अभी हम वर्तमान समय में 4G तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और इस तकनीक का इस्तेमाल करके हम 1 सेकेंड में करीब 1GB की फाइल को डाउनलोड करने की क्षमता रखते हैं, वही 5G की तकनीक में हमें 1 सेकेंड के अंदर करीब 10GB या इससे ऊपर की डाउनलोडिंग क्षमता वाली गति प्राप्त होगी।
- **डिजिटल इंडिया क्षेत्र में विकास**

  5G नेटवर्क के आ जाने से देश में डिजिटल इंडिया को एक अच्छी गति प्राप्त होगी और साथ ही में देश के विकास में भी तीव्रता आएगी।
- **जीडीपी बढ़ोत्तरी में तेजी**

  हाल ही में आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन ने दावा करते हुए कहा है, कि देश में 5G के तकनीक के आ जाने से हमारे देश की जीडीपी एवं अर्थव्यवस्था में काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल सकता है।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी के नुकसान

- तकनीकी शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों के अनुसार एक शोध में पाया गया कि 5G तकनीक की तरंगें दीवारों को भेदने में पूरी तरीके से असक्षम होती है। इसी के कारणवश इसका घनत्व बहुत दूर तक नहीं जा सकता है और इसी के परिणाम स्वरूप इसके नेटवर्क में कमजोरी पाई गई।
- दीवारों को भेदने के अलावा इसकी तकनीक बारिश, पेड़–पौधों जैसे प्राकृतिक संसाधनों को भी भेदने में पूरी तरीके से असक्षम सिद्ध हुई है। 5G तकनीक को लॉन्च करने के बाद हमें इसके नेटवर्क में काफी समस्या देखने को मिल सकती है।

5G नेटवर्क IMT–2020 नामक एक नई एयर इंटरफेस तकनीक पर आधारित होगा जो मोबाइल नेटवर्क के प्रदर्शन में 10 गुणा सुधार करने के लिए तैयार है। इसका मतलब है कि 5G नेटवर्क निम्नलिखित लाभ प्रदान करेगा:

- तेज डाउनलोड गति।
- कम विलंबता।
- अधिक उपकरणों के लिए समर्थन।
- बड़ी मात्र में डेटा संचारित करने की क्षमता।
- कम बिजली की खपत।

अगली पीढ़ी का सेलुलर नेटवर्क नई तकनीकों की एक श्रृंखला का समर्थन करेगा जो अभी तक व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं हैं, जैसे स्वायत्त वाहन, आभासी वास्तविकता (वीआर), संवर्धित वास्तविकता (एआर) और बहुत कुछ। यह उम्मीद की जाती है कि 5G नेटवर्क 2023 तक 20 गीगाबाइट प्रति सेकंड (GB @ s) या इससे अधिक की गति का समर्थन करेगा।

5G नेटवर्क स्पेक्ट्रम बैंड

5G की नई तकनीक में मिलीमीटर एवं वेव (millimeter & wave) स्पेक्ट्रम अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसको सबसे पहले जगदीश चंद्र बोस जी ने प्रस्तुत किया था और उन्होंने बताया था, कि इन वेव का इस्तेमाल करके हम कम्युनिकेशन को बेहतर बना सकते हैं। इस प्रकार की तरंगें करीब 30 से लेकर 300 गीगाहर्ट्ज फ्रीक्वेंसी पर काम कर सकती हैं। ऐसी तरंगों का इस्तेमाल हम सैटेलाइट और रडार सिस्टम के अंदर भी करते हैं। 5G नेटवर्क की नई तकनीक करीब 3400 मेगाहट्र्ज, 3500 मेगाहट्र्ज और यहाँ तक कि 3600 मेगाहट्र्ज बैंड्स पर काम कर सकती है। इस नई नेटवर्क तकनीक के लिए 3500 मेगाहट्र्ज बैंड इसके लिए एक आदर्श बैंड कह सकते हैं, क्योंकि यह सबसे मध्य का बैंड है और इसके साथ ही यह काफी अच्छी कनेक्टिविटी भी प्रदान करता है।

भारत में 5G नेटवर्क की लॉन्च तिथि

- DoT ने 2022 के अंत तक भारत के 13 शहरों में 5G नेटवर्क की स्थापना की पुष्टि की है
- एयरटेल (Airtel) 5G अब तक 10 शहरों में उपलब्ध है, जबकि Jio 5G 8 शहरों में उपलब्ध है। लॉन्च इवेंट में, रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमेन मुकेश अंबानी ने अगले साल के अंत तक पूरे देश में 5G की पेशकश करने का

वादा किया है, और एयरटेल ने बताया कि 5G मार्च 2024 तक सभी तक पहुँच जाएगा।

- वोडाफोन, आइडिया के लिए, यह अभी भी साफ नहीं है कि कंपनी अपने ग्राहकों को 5G सर्विस कब तक देगी। टेलीकॉम कंपनी ने मार्च 2024 तक सभी शहरों में 5G के प्रसार का वादा किया है, लेकिन अभी तक 5G के रोलआउट पर कोई रिपोर्ट सामने नहीं आई है।

भारत में 5G रोलआउट के लिये चुनौतियाँ

- **कम फाइबराइज़ेशन फुटप्रिंट:** पूरे भारत में फाइबर कनेक्टिविटी को अपग्रेड करने की आवश्यकता है, जो वर्तमान में भारत के केवल 30% दूरसंचार टावरों को जोड़ता है। कुशलता पूर्वक 5G को लॉन्च करने के लिये इस संख्या को दोगुना करना होगा।
- **'मेक इन इंडिया' हार्डवेयर चुनौती:** कुछ विदेशी दूरसंचार OEMs (मूल उपकरण निर्माता) पर प्रतिबंध, जिस पर अधिकांश 5G प्रौद्योगिकी विकास निर्भर करता है, अपने आप में एक बाधा प्रस्तुत करता है।
- **उच्च स्पेक्ट्रम मूल्य निर्धारण:** भारत का 5G स्पेक्ट्रम मूल्य वैश्विक औसत से कई गुणा महँगा है। यह भारत के नकदी संकट से जूझ रही दूरसंचार कंपनियों के लिये नुकसानदायक होगा।
- **इष्टतम 5G प्रौद्योगिकी मानक का चयन:** 5G प्रौद्योगिकी कार्यान्वयन में तेज़ी लाने हेतु घरेलू 5Gi मानक और वैश्विक 3 GPP मानक के बीच संघर्ष को समाप्त करने की आवश्यकता है। जबकि 5Gi का स्पष्ट दृष्टिकोण लाभ है, यह टेलीकॉम के लिये 5G इंडिया लॉन्च लागत और इंटरऑपरेबिलिटी मुद्दों को भी बढ़ाता है।

आगे की राह

- **घरेलू 5G उत्पादन को बढ़ावा देना:** देश को भारत में 5G के सपने को साकार करने के लिये अपने स्थानीय 5G हार्डवेयर निर्माण को अभूतपूर्व दर से प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- **मूल्य निर्धारण युक्तिकरण:** इस स्पेक्ट्रम के मूल्य निर्धारण के युक्तिकरण की आवश्यकता है, ताकि सरकार भारत में 5G के कार्यान्वयन योजनाओं को बाधित किये बिना नीलामी से पर्याप्त राजस्व उत्पन्न कर सके।
- **ग्रामीण–शहरी अंतर को कम करना:** 5G को विभिन्न बैंड स्पेक्ट्रम और निम्न बैंड स्पेक्ट्रम पर तैनात किया जा सकता है, यह सीमा बहुत लंबी है और ग्रामीण क्षेत्रों के लिये भी सहायक हो सकती है ।

❑❑❑

पेड़

विभाष कुमार
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, रोहिणी

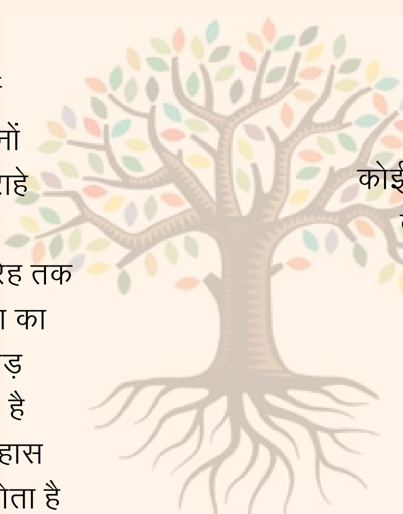

गाँव के हर महत्वपूर्ण
विशिष्ट एवं पूज्य स्थानों
दोराहे, तिराहे और चौराहे
यहाँ तक कि
खेत, खलिहान और दूर सरेह तक
पीपल, बरगद और महुआ का
कोई न कोई विशाल पेड़
अक्सर हमें दिख जाता है
जिसका अपना एक इतिहास
भूगोल और समाजशास्त्र होता है

कोई उसे देवता मानकर पूजता है
कोई उसे अपने पूर्वजों की निशानी समझता है
तो कोई राहगीर, मजदूर और चरवाहा
उसके नीचे बैठ
जेठ– बैसाख की घूप में
शीतलता पाता है इसलिए
ग्रामीण मूल्यबोध में
इसे केवल एक पेड़ नहीं मानकर
समाज का हिस्सा माना जाता है।

मेरा प्रिय क्रिकेट खिलाड़ी

उग्रसेन चौरसिया
प्रबन्धक (राजभाषा)
नई दिल्ली, अंचल कार्यालय

मेरे प्रिय क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर हैं। सचिन तेंदुलकर का पूरा नाम सचिन रमेश तेंदुलकर है। सचिन तेंदुलकर को क्रिकेट में अविस्मरणीय योगदान के लिए जाना जाता हैं। सचिन तेंदुलकर का जन्म 24 अप्रैल 1973 को मुंबई में हुआ। इनके पिता का नाम रमेश तेंदुलकर था जोकि प्रसिद्ध मराठी कवि और उपन्यासकार थे एवं इनकी माता का नाम रजनी तेंदुलकर जो बीमा कंपनी में कार्यरत थी। सचिन बचपन से ही क्रिकेट के साथ टेनिस के भी शौकीन थे। क्रिकेट में रुझान को देख कर बड़े भाई अजित तेंदुलकर ने सचिन को प्रसिद्ध क्रिकेट कोच रमाकांत आचरेकर के मार्गदर्शन में मुंबई के दादर, शिवाजी पार्क में क्रिकेट की बारीकियों को सीखने के लिए भेजा। कोच रमाकांत आचरेकर ने सचिन के हुनर को पहचान लिया और वे समझ गए कि सचिन लंबी रेस के घोड़े हैं और उन्होंने सचिन की प्रतिभा को निखार कर दुनिया के सामने ला दिया। सचिन तेंदुलकर रणजी ट्रॉफी में मुंबई की ओर से खेलते थे। सचिन तेंदुलकर का टेस्ट क्रिकेट में आविर्भाव 15 नवम्बर 1989 में पाकिस्तान के खिलाफ़ कराची में हुआ। सचिन तेंदुलकर ने अपने कैरियर में अनगिनत रिकॉर्ड बनाए हैं। 24 वर्ष के क्रिकेट कैरियर में उन्होंने 100 रिकॉर्ड अंतराष्ट्रीय शतक लगाए जिसमें 200 टेस्ट में 51 शतक, 68 अर्धशतक के साथ रिकॉर्ड 15921 रन और 463 एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैचों में 49 शतक और 96 अर्धशतकों की सहायता से 18426 रन बनाए। सचिन तेंदुलकर ने अपने कैरियर में रिकोर्डो की झड़ी लगा दी। सचिन ने इसके अलावा एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पहला दोहरा शतक दक्षिण अफ्रीका

के खिलाफ 2010 में बनाया। सचिन ने इसके अलावा टेस्ट क्रिकेट में 46 और एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में अपनी चतुराई वाली गेंदबाजी से 154 विकेट भी चटकाए। सचिन को साझेदारियाँ तोड़ने वाले गेंदबाज के रूप में भी जाना जाता है। सचिन ने अपने कैरियर में एक से एक बेहतरीन गेंदबाजों के खिलाफ रन बनाए चाहे वह वेस्टइंडीस के मैल्कम मार्शल, कर्टनी वाल्श, कर्टली एम्ब्रोज हो या फिर पाकिस्तान के इमरान खान, वसीम अकरम, वकार यूनिस, शोएब अख्तर, सकलैन मुश्ताक़ हो या फिर दक्षिण अफ्रीका के शान पोलक, एलन डोनाल्ड या फिर श्रीलंका के चमिण्डा वास, मुथैया मुरलीधरन हो या फिर ऑस्ट्रेलिया के मेंकड़ोरमट, ग्लेन मेंक्ग्राथ, शेन वार्न ही क्यों न हो, सबके विरुद्ध सफलतापूर्वक रन बनाए। यह श्रेणी बहुत ही लंबी एवं खत्म न होने वाली है। पूरा विश्व सचिन तेंदुलकर की बल्लेबाजी का कायल हैं। बल्लेबाजी का शायद ही कोई ऐसा रिकॉर्ड हो जो सचिन तेंदुलकर के नाम न हो। न जाने कितने क्रिकेटप्रेमी होंगे जो सचिन के आऊट होते ही टेलिविजन, रेडियो बंद कर देते थे या फिर स्टेडियम छोड़ कर चले जाते थे, उनमें एक मैं भी हूँ। सचिन तेंदुलकर एक ऐसा नाम है जिसने लाखों– करोड़ो क्रिकेट प्रेमियों के दिलों पर वर्षों राज किया। वे जब बल्लेबाजी के लिए उतरते थे तो हम भारतवासियों के दिलों की धड़कने थम जाती थी। सिर्फ भारत ही नहीं विदेशों में भी सचिन के चाहने वालों की कोई कमी नहीं है। सचिन तेंदुलकर ने क्रिकेट के माध्यम से भारत का नाम पूरे विश्व में रौशन किया। सचिन तेंदुलकर को ऑस्ट्रेलिया के डॉन ब्रेडमेन के बाद सबसे सर्वश्रेष्ठ और महानतम बल्लेबाज माना जाता हैं। सचिन तेंदुलकर ने 6 क्रिकेट विश्वकप में भाग लिया और 45 मैचों में 6 शतक 15 अर्धशतक सहित सबसे अधिक 2560 रन बनाए, जोकि एक विश्व रिकॉर्ड है। सचिन तेंदुलकर ने 2011 विश्वकप में 9 मैचों में 482 रन बनाए और भारत के विश्वकप जीतने में

अहम भूमिका निभाई। इन्होंने अपने पूरे कैरियर जीवन में 15 मैन ऑफ द सिरीज़ और 62 मैन ऑफ द मैच पुरस्कार जीते। सचिन तेंदुलकर को क्रिकेट में शानदार योगदान के लिए भारत रत्न, मेजर ध्यान चंद खेल रत्न, अर्जुन पुरस्कार, महाराष्ट्र भूषण, पद्मविभूषण, राजीव गाँधी खेल रत्न, विजडन क्रिकेटर ऑफ द इयर और बहुत से अन्य पुरस्कारों एवं सम्मानों से नवाजा गया। कहते हैं किसी भी अच्छी चीज का अंत अवश्य होता है और वो दिन भी आ गया जब 24 वर्षों के लंबे क्रिकेट कैरियर के बाद उन्होने 13 नवम्बर 2013 को मुंबई के वानखेडे स्टेडियम में वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना आखिरी टेस्ट मैच खेलते हुए क्रिकेट को अलविदा कह दिया। इसी के साथ हम कह सकते हैं कि क्रिकेट में एक स्वर्णिम युग का समापन हो गया। इनके रिटायरमेंट के बाद क्रिकेट में एक सूनापन हो गया जिसको भरना किसी भी अन्य खिलाड़ी के लिए मुश्किल हैं। सचिन तेंदुलकर द्वारा बनाए गए रिकॉर्ड एवं कीर्तिमान खुद ही उनकी सफलता के आयाम को बयान करते हैं और अब देखना दिलचस्प होगा कि क्रिकेट में आने वाली पीढ़ियाँ कहाँ तक उनके करीब पहुँच पाती हैं। सचिन तेंदुलकर ने पूरे क्रिकेट विश्व में राज किया और उनके योगदान एवं शानदार कैरियर के लिए उन्हें क्रिकेट का भगवान भी कहा जाता है।

❏❏❏

पीएनबी में हिंदी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन

पंजाब नैशनल बैंक में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली में हिंदी माह के उपलक्ष्य में राजभाषा समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल ने की। इस अवसर पर बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे तथा श्री कल्याण कुमार सहित मुख्य महाप्रबंधकगण एवं महाप्रबंधकगण विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय ने सर्वप्रथम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से बैंक को 02 'राजभाषा कीर्ति' पुरस्कार दिल्ली बैंक नराकास को 'राजभाषा कीर्ति' प्रथम पुरस्कार एवं पंजाब नैशनल बैंक को 'राजभाषा कीर्ति' द्वितीय पुरस्कार प्राप्त होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए समस्त स्टाफ सदस्यों को हार्दिक बधाई दी।

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी तथा कार्यपालक निदेशकगणों द्वारा प्रधान कार्यालय के विभिन्न विभागों, अंचलों तथा मंडल कार्यालयों के स्तर पर लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस दौरान काव्य संध्या का आयोजन भी किया गया। प्रसिद्ध कवि पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा एवं कवियित्री डॉ. सीता सागर जी ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की। श्री सुरेन्द्र शर्मा जी ने अपनी हास्य कविताओं से श्रोताओं को खूब हंसाया और साथ ही अपनी व्यंग्यपूर्ण रचनाओं के माध्यम से सामाजिक संदेश भी दिया तथा कवियित्री डॉ. सीता सागर ने अपनी भावपूर्ण और रचनानात्मक कविताओं से साहित्यिक भावों को अलंकृत कर श्रोताओं को मंत्र–मुग्ध कर दिया।

सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी पखवाड़े का आयोजन

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, आंचलिक कार्यालय दिल्ली द्वारा अंचल प्रमुख, श्री अमित तुली की अध्यक्षता में आयोजित हिंदी दिवस समारोह का शुभारम्भ करती हुई श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार। साथ में हैं, श्री राजेश कुमार शर्मा, उप महाप्रबंधक तथा श्री भवानी शंकर गुप्ता, उप अंचल प्रमुख।

राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा आयोजित 'हिंदी माह एवं पुरस्कार वितरण समारोह' की मुख्य अतिथि, सुश्री कुमुद शर्मा, प्रोफेसर (हिंदी), दिल्ली विश्वविद्यालय का अभिनन्दन करते हुए प्रबंध निदेशक, श्री शारदा कुमार होता। साथ में हैं कार्यपालक निदेशक, श्री राहुल भावे एवं श्री वी वैदीश्वरण तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री सुशील कुमार व श्री विशाल गोयल, महाप्रबंधक।

आईडीबीआई बैंक में हिंदी पखवाड़े के शुभारम्भ के अवसर पर माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी का संदेश पढ़ते हुए मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, श्री रंजन कुमार रथ। साथ में हैं, महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख, श्री मनोज कुमार एवं अन्य स्टाफ सदस्यगण।

पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय पश्चिमी दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह में हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए उप मण्डल प्रमुख, श्री विजेन्द्र सिंह।

इण्डियन ओवरसीज बैंक द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह में उपस्थित मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री डमरूपाणि वी, सहायक महाप्रबंधक, श्री तिलक राज जैन एवं श्री संजय कुमार झा तथा अन्य स्टाफ सदस्य।

सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी पखवाड़े का आयोजन

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा हिंदी माह के दौरान 'भारतीय अर्थव्यवस्था के नए परिदृश्य : चुनौतियां और अवसर' विषय पर आयोजित व्याख्यान के मुख्य अतिथि वक्ता, प्रो. शक्ति कुमार, चेयरपर्सन, सीईपीसी, जेएनयू का स्वागत करती हुई मुख्य महाप्रबंधक एवं प्रभारी अधिकारी, श्रीमती एन. मोहना।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित 'हिंदी समारोह' में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए श्री जे. एस. साहनी, महा प्रबंधक एवं अंचल प्रबंधक।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा हिंदी माह के दौरान व्याख्यान में मुख्य अतिथि वक्ता प्रो. शक्ति कुमार, चेयरपर्सन, जेएनयू सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए।

इण्डियन ओवरसीज बैंक द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह में स्टाफ सदस्यों को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक, श्री डमरूपाणि वी एवं सहायक महाप्रबन्धक, श्री तिलक राज जैन।

भारतीय रिज़र्व बैंक, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह के सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य प्रस्तुत करती हुई स्टाफ सदस्या।

पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिण दिल्ली द्वारा आयोजित 'हिंदी माह' के अवसर पर अपनी प्रस्तुति देते हुए स्टाफ सदस्या।

सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी पखवाड़े का आयोजन

पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित राजभाषा समारोह एवं कवि सम्मेलन के अवसर पर आमंत्रित कवियों डॉ. रसिक गुप्ता, सरदार मनजीत सिंह, श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेई, श्रीमती सौनाली बोस, श्री कमलेश भट्ट कमल के साथ उच्चाधिकारीगण।

भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय–1, द्वारा आयोजित 'हिंदी पखवाड़ा' के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए उप महाप्रबंधक, श्री दीपक कौशिक।

भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय–1, द्वारा आयोजित 'हिंदी पखवाड़ा' का शुभारम्भ करते हुए उप महाप्रबंधक, श्री दीपक कौशिक।

पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिण दिल्ली द्वारा आयोजित 'हिंदी माह' के समापन पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए मंडल प्रमुख, श्री अमृताभ आनंद एवं उप मंडल प्रमुख, श्री संजय वर्मा।

''आस्तियाँ''

श्वेता कुमारी
सहायक प्रबंधक
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
यूनिवर्सिटी शाखा

खुद को ना रोक सकूँ, अक्सर मैं यह सोचूँ,..........
अनर्जक आस्तियों की शुरुआत, हुई क्यूँ –किसके साथ ?
महाबैंक की दिशा–निर्देश पर, इन आस्तियों की दस्तान है,
कसौटी पर खरे उतरना, अब हमारा इम्तेहान है।
प्रकृति का नियम, जहाँ अच्छाई वहाँ बुराई है
क्या इसलिए ऋण के साथ एनपीए आई है,
ऋण प्रक्रिया में हम सब, करते अपनी जाँच है,
फिर क्यूँ अर्जक अस्तियों पर आती आँच है ?
निर्धारित नियामक मापदंड का अनुसरण करेंगे,
समय – समय पर जाँच, ऋणग्राही के संग मुलाकात करेंगे,
तो कुछ कम होगा एनपीए का विकास, होंगे हम सब पास,
खुद को बनायेंगे अर्जक आस्ति, फिर खुश होगी हमारी हस्ती,
फिर ओटीएस समझौता – एनपीए मसला कम होगा
आओ एक बार फिर हम सब अपनी पूर्ण भूमिका निभाये,
समाज की भी अनर्जक आस्तियों को अर्जक बनायें....

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मुकुल सदन

अर्चना भारद्वाज
विशेष सहायक
आईडीबीआई बैंक लिमिटेड

यूँ तो अपनी जिंदगी के हम सभी किरदार होते हैं किंतु जो अपने संघर्षों से जूझकर बाहर निकल आते हैं, वही अपनी कहानी के सच्चे नायक कहलाते हैं। ऐसे साधारण लोग जो अपनी निराशाओं में डूब रहे होते हैं और खुद ही हिम्मत से लड़ते हुए इस भंवर से बाहर आते हैं तो वो समाज के लिए एक मिसाल बन जाते हैं। मेरी कहानी की नायिका आशालता मैडम भी एक ऐसी ही मिसाल बनकर सामने आई।

आशालता मैडम मेरी स्कूल अध्यापिका थी जो हमें इक्नोमिक्स पढ़ाती थी। एकदम साधारण सी दिखने वाली महिला मितभाषी और मृदुभाषी होने के कारण सबकी प्रिय थी किंतु अचानक ही जाने क्या हुआ कि वो हमारे बोर्ड के इम्तिहानों के बाद दोबारा कभी नहीं दिखी और न ही कभी उनका ज़िक्र हुआ।

पर लगभग सैंतीस वर्ष बाद पुणे में उनसे मेरी इत्तेफ़ाकन भेंट होना एक सुखद आश्चर्य था। मैं अपनी बेटी के एड्मिशन के लिए पुणे आई थी और उसके लिए हॉस्टल तलाश रही थी। किसी ने हमको "मुकुल सदन" का नाम सुझाया। जब हमने ऑनलाइन ढूँढ़ा तो इसकी जानकारी नहीं मिली पर जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि वो शांत इलाके में बड़े से घर में बना है।

मैंने बेल बजाई तो एक अधेड़ महिला ने दरवाजा खोला। उनको देखकर सहसा अपनी आशालता मैडम की याद आ गई। मैंने बताया कि अपनी बेटी के लिए हॉस्टल देख रही हूँ तो उन्होंने कहा, ''हां–हाँ, आ जाओ अंदर, ये लड़कियों का ही हॉस्टल है।"

हॉस्टल सुंदर बना हुआ था। साफ–सुथरा हवादार और सामने बहती हुई नदी ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने मुझे किराया और बाकी सब जानकारियाँ देते हुए पूछा, ''बेटी कौन सा कोर्स करने आई है और कौन से कॉलेज में जाएगी''? मैंने उनको सब बताया तो बोलीं, ''यहाँ से तो कॉलेज बहुत पास है, बेटी को कोई दिक्कत नहीं होगी।"

फिर मैंने पूछा ''मैडम, क्या आप दिल्ली में भी रही थीं? ''वो बोली "हाँ, केन्द्रीय विद्यालय में टीचर थी।'' मैं बोली "कहीं आप आशालता मैडम तो नहीं हैं? उन्होंने हामी भरी। ''आपने मुझे दसवीं में इक्नोमिक्स पढ़ाई है मैम, आप हमारी फेवरेट टीचर थी।" वो मुस्कुरा कर बोली "ये सुनकर अच्छा लगा"। "आप कहाँ चली गई थी मैम, हमारे एग्जाम्स के बाद आपकी कोई सूचना ही नहीं मिली।"

मैम थोड़ा उदास हो गईं और बोली "बड़ी लंबी कहानी है।" मैंने आग्रहपूर्वक कहा "मैम, कुछ तो बताइये" तो गहरी सांस लेकर बोली "1987 की छुट्टियों में हम साउथ घूमने गए थे। उस दिन पूर्णमासी की रात थी जब हम समुद्र किनारे बैठे थे और ऊँची–ऊँची लहरें उठ रही थी। अचानक मेरा बेटा समुद्र की ओर भागा तो मेरे पति भी उसे रोकने को उसके पीछे भागे। मैं किनारे पर खड़ी शोर मचाती रह गई और जब तक कोई कुछ समझ पाता, वो दोनों पानी में डूब चुके थे। मैंने उसी शहर में उनका अंतिम संस्कार किया और पुणे चली आई।"

मैं बहुत ही डिप्रेशन में थी और स्वयं को खत्म करने का निर्णय तक ले चुकी थी पर एक घटना ने मेरी ज़िंदगी बदल दी। हमारे गाँव से रिश्ते की एक मौसी अपनी पोती के साथ मेरा पता पूछते–पूछते यहाँ आई और मुझसे अपनी पोती को यहाँ छोड़ने की विनती करने लगी। वो बोली "इसके माँ–बाप हैज़े से मर गए हैं, मैंने इसे गाँव के स्कूल में पढ़ा तो दिया है पर अब कॉलेज में दाखिला दिलाना है, इसलिए तुम्हारे पास लेकर आई हूँ। तुम इसका दाखिला किसी कॉलेज में करा दो तो ये भी पढ़–लिखकर कुछ अच्छा कर लेगी।"

मैंने जिम्मेदारी से बचने के लिए आनाकानी की पर उन्होंने मुझसे एक ही बात कही कि "हम सबने एक न एक दिन मर जाना है तो क्यों न किसी के लिए थोड़ा जीकर जाएँ। मेरे जवान बेटा–बहू मर गए पर मैं इसके लिए जीती रही। ये अच्छी ज़िंदगी जिये बस यही मेरा उद्देश्य है।'' उनकी बातों ने मुझे बहुत प्रेरित किया और मुझे जीने का मक़सद मिल गया। मैंने उस लड़की को पढ़ाया और अब वो एक आईटी कंपनी में अच्छी पोस्ट पर यूएस में है।"

"मैने पति के नाम पर ''मुकुल सदन'' को लड़कियों के लिए हॉस्टल बनाया। जो बहुत गरीब होती हैं उनसे सिर्फ खाने के पैसे लेती हूँ और उनकी पढ़ाई और नंबरों के आधार पर स्कॉलरशिप भी देती हूँ। उन्होंने आगे कहना जारी रखा, "आज मेरे पास जीने के लिए इतनी सारी वजह हैं कि लगता है कि मेरे पति और बेटा जहाँ कहीं भी हैं, जरूर संतुष्ट होंगे।"

द्रवित हृदय से मैंने हाथ जोड़कर श्रद्धापूर्वक उन्हें नमन किया। अब मुझे तसल्ली थी कि मेरी बेटी बहुत ही सशक्त हाथों की छत्रछाया में सुरक्षित रहेगी और उसे जीवन के संघर्षों से लड़ना और उनसे पार पाना भी आ जाएगा।

आशालता मैम जैसे कितने ही साधारण लोग हमें कैसे असाधारण बनने की प्रेरणा दे देते हैं कि हमें पता ही नहीं चलता।

संस्कृति मूलक

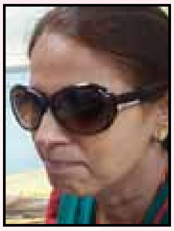

विमला नेगी
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली(मध्य)

संस्कृति मूलक इस समाज की
अहम इकाई है परिवार,
जिसके कंधों पर है
भावी भारत के सपनों का भार।

पर जब तक कमजोर हैं कंधे
बोझ नहीं सह पाएंगे
कष्टों के खारे समुद्र में
सब सपने बह जाएंगे

बढ़ती आबादी, घटते संसाधन,
घोर निरक्षर जन
सब अभाव की निर्मम चक्की में
पिस कर रह जाएंगे।

मूलभूत सुविधा से वंचित
क्या लेंगे अपने अधिकार
संस्कृति मूलक इस समाज की।।।

घायल स्त्री अस्मिता युगों से
हे प्रतिनिधि अब तो जागो,
नारी है वरदान उसे
अभिशाप मानकर मत त्यागो।

न्यायोचित व्यवहार उसे दो,
संबल दो अपनेपन का
हो उदारता संबंधों में
जुड़े तार मन से मन का।।।

किंतु मीत बन करो न उसके
स्वाभिमान पर तीक्ष्ण प्रहार
संस्कृति मूलक इस समाज की।।।

फूलों की मुस्कान अनूठी,
झरनों का मीठा संगीत
सोनचिरैया जैसी बिटिया
दिव्य आस्था परम पुनीत।

पुत्र मोह वश उसे मिटा कर
तुम जघन्य मत पाप करो,
स्नेह ज्ञान के पंख उसे दो,
पृथ्वी का अभिशाप हरो।

हर पुत्री को मिले
स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और लाड दुलार
संस्कृति मूलक इस समाज की।।।

भारत गौरव बने विश्व का
हर घर में खुशहाली हो
सर्व सुलभ हो ज्ञान
सभी के जीवन में हरियाली हो।

कामगार मेहनतकश को
अपने श्रम का प्रतिदान मिले,
निर्धन की संतान को भी
सुख के समस्त सोपान मिलें।

मिटे अंधविश्वास रूढ़ियां
आत्तजनों का हो उद्धार,
जिनके कंधों पर है भावी भारत के सपनों का भार
संस्कृति मूलक इस समाज की
अहम इकाई है परिवार।

यह कैसी आज़ादी

शिल्पा बंसल
सहायक प्रबंधक
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
प्रशांत विहार शाखा

रोज की तरह आज सुबह भी ठीक 7.30 बजे बिना अलार्म के ही नींद खुल गई। सोचा आज तो पूरे दिन आराम फरमाउंगा। 15 अगस्त की छुट्टी जो थी। करवट ली और फिर दोबारा आँखे बंद कर ली..। रोज रोज की चिकचिक, भीड़–भाड़ और शोर–शराबे से मिली आज़ादी से आज सच का सुकून मिल रहा था....।

थोड़ी ही देर में काफी शोरगुल होने लगा.....रसोई में टकराते बर्तनों की खटपट और घर में काम से हो रही सुबह की हलचल को मेरी शांति–सुकून भला ज़्यादा देर तक रास कहाँ आने वाले थे और वो पड़ोस में रहने वाले शर्मा जी का खटारा रेडियो भी तो था, जो रामनगर वालों के लिए रोज़ मुर्गे की बांग का काम करता है....।

इस शोर–गुल ने मेरी नींद उड़ा ही दी....। उठते ही पास में पड़ा टी.वी. रिमोट उठाया। जी चाह रहा था कि आज बिस्तर से उठूँ ही नहीं और बिस्तर पर पड़े सारा दिन बस टी.वी. ही देखता रहूँ। रोज़ तो पूरा दिन बस कम्प्यूटर से आँखे चिपकाए बैठे रहो और ठक–ठक की–बोर्ड पर उंगलियाँ चलाते रहो....। दफ्तर से घर वापिस आते 11.30 बजे ही जाते हैं, तो ऐसे में टी.वी. देखने की फुर्सत ही नहीं मिल पाती...। और यह महाशय टी.वी रिमोट जी तो बड़ी फुर्सत से ही हाथ में आते हैं.....रोज़ तो बस दफ्तर की चारदीवारी में कैदियों की तरह दिन कट जाता है और हाथ में टी.वी रिमोट की जगह काली स्क्रीन वाले डब्बे का माउस ही आता है....। वैसे अभी तो सिर्फ चैनल ही बदल बदल के देख रहा था, तभी श्रीमतीजी कमरे में आयी और बोलीः– ''अरे उठ गये आप, सुनिए यह टी.वी अभी छोड़िए, नहा लीजिये पहले ...। फिर नाश्ता लगा देती हूँ।''

''अरे सुधा, आज ऐसे ही दे दो, थोड़ी देर में नहा लूँगा।'' मैं उबासी लेते हुये बोला।

सुधा गर्दन झटकाते हुए बोली '' नहीं नहीं...पहले नहा लीजिए....और माँ तो कब से आपको उठाने को कह रही है.....वो दरअसल.....''।

तभी कमरे के बाहर खाट पर बैठी माँ की आवाज आई ''सुधा जब तक यह नहा के पूजा ना कर ले, इसे नाश्ता देने कि जरूरत नहीं है..... और राकेश कब तक बिस्तर तोड़ता रहेगा तू ? सूरज सिर पर चढ़ आया है। कब से आवाज दे रही हूँ। छुट्टी का मतलब यह तो नहीं कि बिस्तर पर ही पड़े रहो। अब जल्दी उठ जा। रोज़ तो दफ्तर जाने की जल्दी में पूजा भी भागता हुआ करता है तू....आज तो भगवान को ठीक से याद कर ले.....और सुन, तेरे ताऊजी पूरे परिवार के साथ दोपहर खाने पर आने वाले हैं, बाजार से कुछ सामान भी लाना है।''

माँ के इतना कहते ही बिस्तर छोड़ उठना ही पड़ा.....। बस फिर मैं झटपट तैयार हो गया। ठीक एक बजे ताऊजी, भईया–भाभी और भतीजी के साथ पहुँच गये। बहुत दिनों बाद घर में चहल–पहल नज़र आ रही थी। सब आज बहुत दिनों बाद इकटठा हुये थे। रविवार के अलावा एक एक्स्ट्रा छुट्टी जो मिल गई थी....।

भाभी माँ के पाँव छूने लगी... तभी माँ ने भाभी को टोका ''बहु अरे यह क्या...तेरे सिर पर पल्लू नहीं है....बड़ों की लाज शर्म नहीं है क्या.....??....भई मेरी बहू में तो इतनी हिम्मत नहीं कि किसी बड़े के सामने सिर ढके बिना चली जाये..... मेरी सुधा तो भूल के भी ऐसा नहीं कर सकती...।

ताऊजी ने कहा ''भाभी, कैसी बात करती हो? सिर ढकने से क्या होता है, मन में इज्जत होनी चाहिए।...यह बहू नहीं बेटी है मेरी.....तो बेटी से कैसा पल्लू कराना...ना ना भाभी...मैं तो नहीं मानता इन सबको....।''

माँ मुँह सिकोड़ते हुए बोली– ''भला हो तुम्हारा, खूब चढ़ाओ बहू को सिर पे... .। .. ''

मेरी भतीजी वहीं भाभी से चिपके हुए खड़ी सहमी–सी नज़रों से माँ की ओर देख रही थी....। सफेद रंग की फ्रॉक में किसी परी से कम नही लग रही थी मेरी प्यारी गुड़िया रानी...।

तभी माँ भतीजी की ओर देखते हुए ऊँची आवाज़ में भाभी से बोली...'' हे राम राम राम.... बहू....... ! यह क्या पहना रखा है अपनी लड़की को तूने? छोटी नहीं रह गई है यह..... अपनी लड़की को सूट पहना कर रखा कर.. पूरा बदन ढका रहता है.. ज़माना बहुत खराब है.... अभी से संभाल के रख अपनी लड़की को तू।''

इससे पहले भाभी कुछ बोलती, ताऊजी ने भाभी को

चुप रहने का इशारा कर दिया।

माँ बहुत ही पुरानी विचारधारा की है। माँ के स्वभाव से घर में सभी परिचित थे। इसलिए कोई उनकी बात को दिल से नहीं लगाता था। पर ताऊजी खुले विचारों वाले हैं। ताऊजी ने खुद को बदलते वक्त के साँचे में ढाल लिया था और नई पीढ़ी की सोच को समझते हुए एक संतुलित जीवनशैली को अपनाने की पूरी कोशिश की। वो भलीभांति जानते थे कि बदलते वक्त के साथ खुद को बदलना बहुत जरुरी है।

8 साल पहले श्याम भईया की लव मैंरिज हुई थी, गीता भाभी पंजाबी हैं और हम लोग ब्राह्मण। भईया की शादी ताऊजी की मर्जी से ही हुई थी। अपनी पोती मान्या को भी वो बहुत लाड़ करते हैं।

पर माँ अभी भी पुरानी परंपराओं को मानती हैं। उनका मानना है, बुजुर्गों ने जितने भी रीति–रिवाज़, नियम–कानून बनाए हैं वो सभी के सभी सही बनाए हैं.....जिन कुछ रीति–रिवाज़ों को हम बेबुनियाद कहकर उनसे मुक्ति पा लेना चाहते हैं,उनकी नज़रों में वो उनके और पुरानी पीढ़ियों के सुखी जीवन का आधार हैं। उनको कई बार समझाने पर भी हम लोग उनकी इस मानसिकता को आज तक ज़रा भी परिवर्तित नहीं कर पाए ..।

फिर बस थोड़ी ही देर में खाने की तैयारी शुरू होने लगी और सुधा रसोई में चली गई। गीता भाभी भी उसका हाथ बंटाने में लग गई। सबको खाना परोसा गया।

सबको खाना खिलाने के बाद सुधा और भाभी साथ वाले कमरे में खाना खाने चली गई। माँ खाना खाके पूजा की माला जपने लगी। मैं, भईया और ताऊजी हम अपनी ताश के खेल की मस्ती में व्यस्त हो गये, बहुत दिनों बाद मौका जो मिला था।

मेरा बेटा कृष्णा और भतीजी मान्या दोनों माँ की खाट के पास ही खिलौनों से खेल रहे थे। थोड़ी देर में दोनों के बीच मार–पीट शुरु हो गई। माँ भौंए चढ़ाते हुये मान्या को डांटते हुए बोली, ''ऐ लड़की ! हद में रह। मेरे पोते पर हाथ कैसे उठाया तूने?... ''

माँ को जहाँ अपने पोते कृष्णा से बहुत प्यार था, वहीं उन्होंने मान्या से कभी प्यार से बात तक नहीं की। मेरे बेटे और भतीजी की उम्र में 3 साल का अंतर है। दोनों बहुत ही शरारती हैं......और बच्चों में झगड़ा होता ही रहता है। पर जिस बात का डर था वही हुआ....।

माँ गुस्से में चिल्लाते हुये बोली ''ओ श्याम की बहू? यही सिखाया है तूने अपनी लड़की को?....लड़की है...दूसरे घर जाना है इसको..ना बोलने की अक्ल, ना कपड़े पहनने का ढंग। हमारी उम्र में लड़कियों के मुँह से आवाज़ तक नही निकलती थी.....इसे तो हाथ भी चलाना आता है............।

भाभी और सुधा खाना बीच में ही छोड़ते हुये भागती हुई बाहर आई।

इससे पहले माँ, गीता भाभी को और कुछ कहती,मैंने माँ को टोका ''ऐसा नहीं होता माँ.. कृष्णा भी तो लड़ रहा था... आपने उसे कुछ नहीं बोला....और मान्या भी तो छोटी बच्ची है...बच्चों में तो खेल–खेल में ऐसा छोटा–मोटा झगड़ा होता ही रहता है। और आज के जमाने में लड़का–लड़की सब बराबर होते हैं.....ज़माना बदल गया है। और माँ ! बच्ची है वो, उसके कपड़ों के पीछे क्यों पड़ गई हो, आप भी कमाल करती हो।''

तभी श्याम भईया भी बोल पड़े....''चाची जी, राकेश ठीक तो कह रहा है। ज़माना बदल रहा है। आज लड़कियाँ लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं। लड़के–लड़की.....बेटी–बहू में भेदभाव करना.....यह सही नहीं है.....।

हमारे देश को आज़ाद हुए इतने वर्ष हो गए हैं....लेकिन हम अभी भी वही पुराने विचारों से जकड़े बैठे हैं।.. हम सब आज अपने देश की आज़ादी की छुट्टी मना रहे हैं, पर क्या आपको लगता है कि हम सच में आज़ाद हैं ...?.......

पुरानी गलत परम्पराएँ.... जाति भेदभाव..... दकयानूसी विचार....हम इन सभी के गुलाम बने हुये हैं। देश में इतना विकास होने के बावजूद आज भी कहीं न कहीं हम आज़ाद नहीं हैं। हम आज भी छोटी सोच का शिकार हैं। आज़ाद होते हुए भी बहुत सी गलत बातों, रीत–रिवाज़ों की जंजीरों में जकड़े हुए हैं..... चाची जी असल में हम तभी आज़ाद होगें जब हम अपनी सोच बदलेंगे। वर्ना 15 अगस्त का दिन बस रविवार की छुट्टी की तरह हुआ ना.....आज़ादी के जश्न का नहीं....। चाची जी....... हम सबको सोच बदलनी होगी। समय के हिसाब से खुद को बदलना होगा। हमें आज के हिसाब से बीते कल की कुछ बातों को पीछे छोड़ना पड़ेगा, नई पीढ़ी की सोच के साथ तालमेल बिठाना होगा, रुढ़िवादी परंपराओं की जंजीरों को तोड़ना पड़ेगा और आज का नयापन अपनाना होगा, तभी तो हम सच में इस आजादी का मीठा फल चख पायेंगे।असली आज़ादी का जश्न मना पायेंगे। वरना आज़ाद होते हुए भी आजाद नहीं कहलायेगें.।...''

तभी माँ भौहें चढ़ाते हुए बहुत गुस्से में बोली....''...श्याम बस कर अब, बहुत हो गया तेरा यह भाषण..... !...और जो करना है करो तुम लोग.....मेरी सुनता कौन है भला...."

माँ का चेहरा गुस्से से लाल पड़ गया था....। तभी माँ खाट से उठी और पूजा की माला लिए बाहर बरामदे में चली गई....। और कमरे में एक चुप्पी सी छा गई....।

❒❒❒

अपनी बातें

हरि शंकर राय
हिंदी, अधिकारी,
दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय..2
युनाइटेड इंडिया इंश्यूरेंस कम्पनी लिमिटेड

हमारी आजादी, आजादी के दीवानों की देन है। आजादी प्राप्ति ही उनका धर्म–कर्म था। देश के प्रत्येक शहीद को हम नमन करते हैं, जिनके बलिदान के कारण हम स्वतंत्र देश में साँसें ले रहे हैं, किंतु मेरे हृदय में देश भक्ति का अहसास तब हुआ, जब मैंने राम मोहन राय सेमिनरी स्कूल में दाखिला लिया और स्कूल के प्रांगण में निर्मित स्मारक देख मुझे ज्ञात हुआ कि 1942 में, यहाँ के दो छात्र भी हाथ में तिरंगा लिए, आजादी की वेदी पर बलि चढ़ गये थे। स्कूल आते–जाते मेरी दृष्टि उन वीर शहीदों के स्मारक पर पड़ती और मैं मन ही मन उन्हें नमन करता। उनकी श्रद्धा मैं, मेरा सिर जितना झुकता...उठने पर अपने आप को उतना ही गौरवांवित महसूस करता।

धन्य वह पुण्य भूमि! धन्य वे वीर! और धन्य मैं....कि मैं भी राम मोहन राय सेमिनरी स्कूल का छात्र रहा। (1974 से..1978 तक)

(बिहार विधान सभा,पटना के सामने स्थापित शहीद स्मारक)

आजादी के दीवाने

हमारे तिरंगे में सतत् संग्राम का इतिहास एवं अनगिनत क्रांतिकारियों की शौर्य गाथाएँ सन्निहित हैं। हमारा साध्य था..स्वराज और साधन, ..देश के क्रांतिकारियों का पूर्ण समर्पण। हमारे देश की मिट्टी के जर्रे–जर्रे में क्रांति की चिंगारी थी, जो अंग्रेजी शासन को जलाकर राख करने के लिए निरंतर सुलगती रही। क्रांति की उन चिंगारियों को सुलगाया था..हमारे वीर क्रांतिकारियों ने। यह निर्विवाद सत्य है कि गण्य क्रांतिकारियों के साथ–साथ अधिकांश ऐसे भी क्रांतिकारी रहे, जो या तो इतिहास के पन्ने तक आये ही नहीं, या फिर आये भी तो चंद पंक्तियाँ बनकर रह गये। आजादी के मतवाले उन क्रांतिकारियों के पैर लक्ष्य की ओर बढ़े किंतु अपने देश की खातिर मिट कर वे वहीं की मिट्टी में दफन हो गये।

आजादी के सात दीवाने...... आजादी के दीवानों में सात क्रांतिकारी (पटना के) ऐसे हैं जो इतिहास के पन्ने पर चंद पंक्तियाँ बनकर रह गये और एक.....! उनके नाम का एक शब्द भी अंकित न हो सका। उन सातों क्रांतिकारियों के नाम एवं परिचय निम्नलिखित हैं:

1. **शहीद उमाकांत प्रसाद सिन्हा** – सारण जिला में नरेंद्र पुर गाँव के निवासी। उमाकांत प्रसाद सिन्हा, राम मोहन राय सेमिनरी विद्यालय में वर्ग नवम् के छात्र थे।
2. **शहीद रामानन्द सिंह** – पटना जिला में शहादत नगर के निवासी। रामानन्द सिंह भी राम मोहन राय सेमिनरी में वर्ग नवम् के छात्र थे।
3. **शहीद राजेन्द्र सिंह** – ये पटना उच्च विद्यालय, गर्दनी बाग़ में इंटर के छात्र थे, जो सारण जिला के बनवारी चक गाँव के रहने वाले थे।
4. **शहीद देवीपद चौधरी** – जमालपुर के निवासी देवीपद चौधरी, मीलर हाई स्कूल में नौवीं कक्षा के छात्र थे।
5. **शहीद जगत्पति कुमार** – ये औरंगाबाद के रहने वाले थे, जो बिहार नेशनल कॉलेज में द्वितीय वर्ष के छात्र थे।
6. **शहीद सतीश प्रसाद झा** – ये पटना कॉलेजिएट स्कूल में कक्षा दसवीं के छात्र थे, जो भागलपुर के रहने वाले थे।
7. **शहीद राम गोविंद सिंह** – ये पुनपुन हाई स्कूल के छात्र थे, जो पटना में दशरथा नामक गाँव के निवासी थे।

अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, महात्मा गाँधी जी के आह्वान पर इन सातों विद्यार्थियों ने आजादी हेतु प्रशस्त पुण्य पथ पर अपने कदम आगे बढ़ाये और जिलाधिकारी डब्ल्यू जी आर्थर के आदेश पर, पुलिस की गोलियों से शहीद हो गये।

1 अगस्त 1942 को प्रसिद्ध गाँधीवादी अनुग्रह नारायण सिंह को अन्य क्रांतिकारियों सहित पटना में राष्ट्रीय ध्वज

फहराने पर अपराधी घोषित करते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। प्रतिक्रिया स्वरूप 11 अगस्त 1942 को दोपहर दो बजे, ये सातों वीर पटना सचिवालय पर तिरंगा फहराने निकले। सर्वप्रथम देवीपद ने झंडा उठाया। वे आगे बढ़े ही थे कि पुलिस ने उन्हें गोली मार दी। उन्हें गिरते देख राम गोविन्द सिंह तिरंगा थाम आगे बढ़ने लगे और वे भी गोली खाकर गिर पड़े। उनके गिरने के पहले ही रामानन्द सिंह ने उनके हाथ से राष्ट्रीय ध्वज ले लिया और जय घोष करते हुए वे आगे बढ़े। किंतु.....! पुलिस की गोलियों से वे भी शहीद हो गये। ऐसी ही सुगति क्रमशः राजेन्द्र सिंह, जगत्पति कुमार और उमाकांत प्रसाद सिन्हा की भी हुई किंतु अंततः वे अपने उद्देश्य में सफल रहे। जगत्पति कुमार को तीन गोलियाँ लगी थी ....एक हाथ में, एक छाती में और एक जाँघ में। उनके हाथ से तिरंगा लेकर आगे बढ़ने वाले उमाकांत प्रसाद सिन्हा थे। गोलियों के शिकार होने के बावजूद भी, उन्होंने सचिवालय के गुंबज पर तिरंगा फहरा दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्, इन शहीदों के सम्मान में पटना सचिवालय भवन के बाहर शहीद स्मारक का निर्माण किया गया जो युग–युग तक इन सातों युवा क्रांतिकारियों की वीरता की याद दिलाता रहेगा। स्मारक के रूप में ध्वज सहित एवं सातों शहीदों की कांस्य प्रतिमा स्थापित है। मूर्तिकार देवप्रसाद रायचौधरी के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं, जिनकी कलाकृत्ति जीवंत है और जो हमें सोचने को विवश कर देती है....''हम कहाँ से कहाँ आ गये !''

आठवाँ दीवाना... इन सातों क्रांतिकारियों के साथ एक अन्य क्रांतिकारी भी थे, जिन्हें इतिहास के पन्ने पर चंद पंक्तियाँ क्या....नाम के लिए एक शब्द भी न मिला। वे थे क्रांतिकारी 'राम कृष्ण सिंह'। शहीद स्मारक सात क्रांतिकारियों की गाथा की अमर स्मृति है, किंतु उन क्रांतिकारियों के साथ राम कृष्ण सिंह भी थे, जिन्हें उस वक्त गिरफ्तार किया गया था। इन्हें शायद ही कोई जानता हो। 11 अगस्त 1942 को, सातों क्रांतिकारियों के शहीद होने के पश्चात्, राम कृष्ण ही थे, जिन्होंने इन क्रांतिकारियों के उद्देश्य को सफल बनाया। इन्होंने ही सचिवालय के गुंबज पर चढ़ कर तिरंगा फहराया था। इस सच्चाई की जानकारी, उस वक्त के सुरक्षा कर्मी ने दी थी। इसका विवरण उस समय के किसी इतिहास में नहीं है किंतु सरकारी दस्तावेज इतना जरूर बताते हैं कि 11 अगस्त 1942 को, पटना सचिवालय में राम कृष्ण सिंह नामक एक युवक की गिरफ्तारी हुई थी। इस बात की पुष्टि, बिहार विधान सभा के तत्कालीन सुरक्षा प्रभारी राजनंदन ठाकुर द्वारा लिखित एक आलेख से होती है, जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया है....''जब सचिवालय पर झंडा फहराने वाले को ढूँढ़ लिया गया, तो हमने उससे पूछताछ शुरू की। उसने अपना परिचय दिया..नाम राम कृष्ण सिंह, घर मोकामा, पटना कॉलेज में आनर्स का छात्र।''

गिरफ्तारी के पश्चात् उन्हें फुलवारी शरीफ कैंप जेल ले जाया गया। किंतु, उस वक्त रास्ते में ही भीड़ ने उन्हें छुड़ा लिया। कुछ महीने बाद, यानी 29 नवंबर 1942 को इन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और नौ महीने तक विचाराधीन कैदी के रूप में रखा गया और फिर...सजा स्वरूप इन्हें चार महीने के लिए सश्रम कारावास मिला। 1 दिसंबर 1947 में ये 'बिहार सिविल सेवा' के लिए चयनित हुए और ईमानदारी पूर्वक अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए 1983 में प्लानिंग डिपार्टमेंट के ज्वाइंट सेक्रेटरी पद से सेवा निवृत्त हुए। तत्पश्चात् इन्होंने एक प्राइवेट फर्म में नौकरी की। स्वतंत्रता के पूर्व जिन आदर्शों को इन्होंने अपनाया, जीवन पर्यन्त उसी आदर्श पर यह चलते रहे। 1942 से ही यह खादी वस्त्र पहनते थे, वो भी घर में काती गयी सूत से। धर्म–जाति से परे, ये मानवता के पुजारी थे। देश विभाजन के दौरान व्याप्त दंगे में इन्होंने कई मुस्लिम परिवारों की सहायता की। जाति–धर्म के प्रति इनके निरपेक्ष भाव–विचार के कारण ही, परंपरागत विचार को वहन करने वाले तत्कालीन समाज द्वारा तीन बार ये जाति से बहिष्कृत हुए।

जेल में रहकर इन्होंने 'टंकार' शीर्षक से एक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में, कविताओं के माध्यम से सचिवालय गोली काण्ड का विस्तृत चित्रण है। मगर...अफसोस ! पुस्तक छपी नहीं या फिर इन्होंने छपवाई नहीं..! इस संबंध में कोई तथ्य प्राप्त नहीं है। हस्तलिखित वह पुस्तक आज भी इनके घर में है। यह बात भाव विह्ल करने वाली है कि जब तक राम कृष्ण सिंह पटना में रहे, प्रत्येक वर्ष 11 अगस्त को शहीद स्मारक जाते और अपने साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते। 26 जनवरी 1984....! फर्म में कार्यरत रहते हुए, इस दिन ध्वजारोहण के शुभ अवसर पर ये इतने भाव विहल हो उठे कि वहीं इन्हें ब्रेन स्ट्रोक आ गया। इन्हें पी. एम. सी. एच. (पटना मेडिकल कॉलेज, हास्पिटल) लाया गया मगर...! महान गाँधीवादी, क्रांतिकारी राम कृष्ण इह लोक से प्रस्थान कर गये।

न कहीं उनकी कोई तस्वीर, न कहीं स्मारक और नाहीं इतिहास के किसी पृष्ठ पर नाम ! हवा के शीतल झोंके की तरह ये आये किंतु अंग्रेजी शासक की आँखों में तिनका चुभा गये। इनके व्यक्तित्व की शीतलता, समाज के श्रांत पथिकों को राहत देती रही और अंततः...जीवन कथा में विराम चिह्न लग गया।

आज भी (2016 के आधार पर, अनुमानतः) राम कृष्ण सिंह के दो पुत्र पटना में, बहादुर पुर स्थित अपने आवास में रहते हैं। उनके बेटों की दिली इच्छा है कि उनके गाँधीवादी, क्रांतिकारी पिता के नाम से स्मारक का निर्माण हो ताकि देशवासी उनके संबंध में जानें कि....'' भले ही ये गाँधी जी के संपर्क में न रहे, लेकिन उनके विचारों और आदशों पर चलने वाले सच्चे गाँधीवादी थे। भले ही क्रांति की आग में जलकर शहीद न हुए, मगर उस आग में अपना स्वार्थ, निजत्व और व्यक्तिपरक जीवन शैली को जलाकर देशहित में खड़े रहने वाले एक महान क्रांतिकारी थे..... ''स्वर्गीय श्री राम कृष्ण सिंह।''

❒❒❒

दिल्ली बैंक नराकास की 56वीं छमाही बैठक

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 56वीं छमाही बैठक **श्री बाबू लाल मीना, निदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय के मुख्य आतिथ्य** तथा **श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष– दिल्ली बैंक नराकास** एवं **मुख्य महाप्रबंधक (दिल्ली अंचल), पंजाब नैशनल बैंक** की अध्यक्षता में **दिनांक 26 जुलाई, 2022 को पंजाब नैशनल बैंक के केन्द्रीय स्टाफ कॉलेज के सभागार में** सम्पन्न हुई।

बैठक में **विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–I** (दिल्ली) उपस्थित थे। बैठक में दिल्ली बैंक नराकास के 45 सदस्य कार्यालयों के स्थानीय कार्यालयाध्यक्षों की गौरवमयी उपस्थिति के साथ– साथ दिल्ली बैंक नराकास के राजभाषा प्रभारियों द्वारा भी सहभागिता की गई।

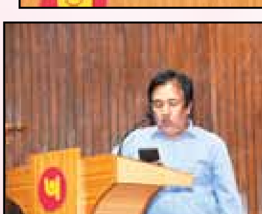

दिल्ली बैंक नराकास की 56वीं छमाही बैठक

बैठक के आरंभ **में श्रीमती मनीषा शर्मा, सदस्य– सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक** ने पीपीटी प्रस्तुतिकरण के माध्यम से नराकास एवं सदस्य कार्यालयों द्वारा किए गए नवोन्मेषी कार्यों एवं राजभाषा गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी तथा दिल्ली बैंक नराकास के सदस्य कार्यालयों से राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का अनुरोध किया।

श्री समीर बाजपेयी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि कोरोना महामारी के दौरान भी दिल्ली बैंक नराकास ने विषम परिस्थितियों में भी राजभाषा का कार्यान्वयन सुचारू रखते हुए राजभाषा के प्रति अपने समर्पण का परिचय दिया है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी भाषा लिखने एवं बोलने में गर्व महसूस करना चाहिए। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि दिल्ली बैंक नराकास के समस्त सदस्य कार्यालय न केवल राजभाषा कार्यान्वयन के सभी लक्ष्य प्राप्त करेंगे अपितु उत्कृष्टता के नए आयाम स्थापित करेंगे।

मुख्य अतिथि, श्री बाबूलाल मीना, निदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने अपने सम्बोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में बैंकों, बीमा कम्पनियों एवं वित्तीय संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। दिल्ली बैंक नराकास इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है। राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए हमें नवोन्मेष युक्तिओं को अपनाना होगा। उन्होंने स्टाफ सदस्यों को प्रशिक्षित करने हेतु पारंगत पाठ्यक्रम एवं कंठस्थ ई–टूल्स को अधिक से अधिक प्रयोग में लाने के निदेश दिए।

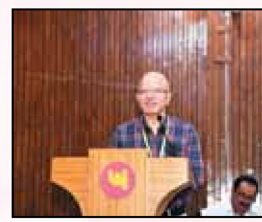

दिल्ली बैंक नराकास की 56वीं छमाही बैठक

विशिष्ट अतिथि, श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने कंठ, कलम और कम्प्यूटर को हिंदीमय करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 351 तभी सार्थक होगा जब हिंदी में कार्य करने के लिए सबका विश्वास एवं सबका प्रयास रहेगा। उन्होंने अपने उद्बोधन के अंत में सबको आह्वान करते हुए कहा कि सभी काम हिंदी में करें और हिंदी में सभी काम करें।

बैठक में सदस्य कार्यालयों द्वारा भेजी गयी छमाही रिपोर्टों की राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के आधार पर राजभाषा अनुपालना की समीक्षा की गयी। इस अवसर पर दिल्ली बैंक नराकास की छमाही पत्रिका **'बैंक भारती'** के 27वें अंक का विमोचन भी किया गया।

बैठक के द्वितीय सत्र में सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों ने गीत–गायन से सांस्कृतिक संध्या को स्मरणीय बनाया।

अंत में श्री सरताज मो. शकील, मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ़ इंडिया के धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

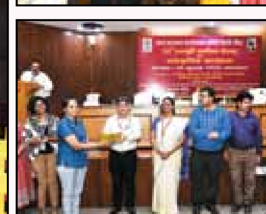

धनतेरस दीपावली और आदिवासी समाज में परंपराएं

डॉ. हीरा मीणा
ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

दोस्तो, हम वैश्विक पर्व दीपावली धूमधाम से मनाते हैं। इससे पूर्व धन तेरस और दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन भी उत्साहपूर्वक मनाये जाते हैं। त्यौहार आदिवासी समाज में कैसे प्रचलित हुए इसकी बहुत सी किवदंतियां और कहानियां प्रचलित हैं। बाजारवाद के विस्तार से त्यौहार मनाने में बहुत सारे परिवर्तन होते रहे हैं।

धान तेरस बनी धन तेरह

सैकड़ों पीढ़ियों से पुरखां फसली त्यौहार को धान तेरस–अन्न तेरस के रूप में मानते आये हैं। पूरा कार्तिक मास और विशेषतौर से तेरस तिथि खरीफ फसल चक्र का त्यौहार है। खरीफ फसलों की कटाई के बाद अन्न और धान को संग्रहित कर कोठार, कोठी या अनाज घर में भण्ड़ारण के रूप में रखा जाता है। घर की सालभर की जरूरत का अनाज इकठ्ठा रखकर बाकी अनाज को बाजार में बेचकर उसकी कीमत को धन के रूप में जरूरत की चीजों या शादी ब्याह में खर्च किया जाता है। रबी फसल की बुआई शुरू की जाती है। मौसम में ऋतु परिवर्तन चक्र, शीतकाल की शुरूआत, माहौल को खुशनुमा और मनभावन बना देता है। कच्चे घर आंगन और दीवारों पर पेड़–पौधे, पशु–पक्षियों के चित्रों के साथ सुंदर और कलात्मक विभिन्न तरह की रंगोलियां और मॉंडणें बनाये जाते है। कातीक की तेरस को अनाज घर, गोहर, कोठार में मिट्टी का दीया सरसों या तिल के तेल का जलाया जाता है। अनाज/धान से जुड़े सभी जगहों पर दीये रखे जाते हैं। अनाज भंडार के आले, दरवाजे की डैली, बाहर बने हुए गोखे पर, अनाज / धान कूटने वाली ओखली/ढेंकी और मूसल के पास, चाकी के ऊपर, चूल्हे के पास, परींडे पर, बर्तन माँजने की जगह उठावणा में, गोबर के संग्रह स्थल 'रेवड़ा' के पास, खेती में सहयोगी चौपाया पशुओं के खूटे के पास, बाड़ा में, खेते में, कुआं के पास, पुरखां भोमिया देवता के चौतरे/थानक पर, सेड़लमाता के थानक पर, गॉंव या खेत के मुहाने पर, नीम, खेजड़ी, पीपल, आम, बबूल के पास दीये जलाये जाते हैं।

खेती–किसानी और जीवन से जुड़ी हुई हर वस्तु, जगह, जीव–जंतुओं और प्राणियों को बहुत महत्व दिया जाता है। सभी पालतू चौपाया जानवरों के सींगों को विभिन्न रंगो से रंगा जाता है। रंगीन धागों में गले में घण्टी और पॉंव में घूंघरू बांधे जाते हैं। शरीर पर मेंहदी से तरह–तरह के छापे लगाये जाते हैं। सभी पशुओं को सजाया संवारा जाता है। बैल–बळद फसल चक्र की रीढ़ होते हैं। खेती–किसानी के साथी बैलों को खूब महत्व दिया जाता है। सबको खूब सजा–संवार कर तैयार किया जाता हैं। घर में बनने वाले विशेष पकवान चूरमा, दाल, बाटी, खीर–पुएँ, चावल–बूरा, पूड़ी, फलका, रोटी, खिचड़ी, गुड़ आदि उन्हें खिलाया जाता है। घर परिवार के सदस्यों की तरह वे भी सबके जीवन में अहम भूमिका निभाते हैं, तब ही फसल चक्र पूर्ण हो पाता है, और अन्न–धान की फसल प्राप्ति होती हैं।

दीवड़ी बनी है .... दीपावली

देशभर के आदिवासी समाज में प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपभोग को कायम करने के लिए शम्भू शेक व सैकड़ों गणकों के साथ पेनवारी बनाने के महान त्यौहार दिवाड़, दुवाड़ी, दवाळी, दीवाड़ी, देववारी के नाम से जाना जाता है।

शहरी लोग इसे दीपावली नाम देकर दीप कम, बारूदी पटाखों का त्यौहार बनाकर सबको संकट में ले आये हैं। महानगरों में प्रदूषण खतरनाक स्तर पर आ गया है। दिल्ली की हवा जहरीली हो गई हैं। लोग स्वासों को तरस रहे हैं। घरों के बाहर जहरीला धुआं फैला हुआ है। घरों में भी लोग बारूदी पटाखों के धमाकों और प्रदूषण से बहुत परेशान हो रहे हैं लेकिन अंधभक्त धर्म और संस्कृति का हवाला देकर लगातार खतरनाक बारूदी पटाखे जला रहे हैं।

बाजारवाद के साथ त्यौहार का विस्तार होते हुए आज वर्तमान में ऐसे स्तर पर आ गया है कि भयानक ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य ही नहीं, जीव–जंतु और प्रकृति भी थर्रा रही है।

पशु–पक्षियों की वेदना, पीड़ा का एहसास संवेदनशील व्यक्ति ही कर सकता है। पटाखों पर सरकारी बंदिशों और कानून के बाद भी वायु प्रदूषण का स्तर बहुत खतरनाक स्तर का हो गया है।

गो धन बन गया गोवर्धन

हम जानते हैं, प्रकृति और जीवन परस्पर एक दूसरे पर निर्भर हैं। संसार के जीव–जन्तु और मानव जीवन पर्यावरण से संचालित और प्रभावित होते रहते हैं। प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपभोग, आदिवासी जीवनशैली के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। संसार के आदिवासियों का जन–जीवन और पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आदिवासी समाज का जंगल, पहाड़, नदियों, धरती, खेत–खलिहान, वन्य–जीवों, पशु–पक्षियों के साथ सहजीवी संबंध रहा है। आदिवासी समुदायों और कृषक वर्गों के जीवन का आधार वनोपज, खेती–किसानी, पशु–पक्षियों के साथ सहजीविता रहा है, इसी कारण इनके पर्व, त्यौहार, उत्सव, मेले, सभी फसल चक्र और उनसे जुड़े पालतु पशुओं–पक्षियों, बैल, गाय, भैंस, पाड़ा, बकरी, भेड़, मुर्गी, बत्तख आदि सभी की अहम भूमिका होती है।

आदिवासी समाज इस त्यौहार को प्रकृति और जीव–जंतुओं के साथ सहजीवी के रूप में देशभर में मनाता आया है। इस त्यौहार का नाम प्रदेश की भाषा बोली और संस्कृति के अनुरूप कहीं गोबरधन, रेवड़ाधन, गौरधन, गौधन, सोहराई, सोहराय आदि कई नामों से जाना जाता है। कृषि और पशुपालन से जुड़े समुदाय, ग्रामीण लोगों की सबसे बड़ी संपत्ति पशुधन ही है। बैल और भैंसा कृषि कार्यों में हमजोली की भूमिका निभाने के कारण इस त्यौहार में विशेष रूप से सजाये व पूजे जाते हैं। तकनीकी विकास से शहरी क्षेत्रों के आस–पास के गाँवों में ट्रैक्टर का उपयोग होने से इस त्यौहार पर ट्रैक्टर की भी पूजा की जाती हैं।

नये अनाज का खान–पान जो अन्नकूट और गोवर्धन पूजा में बदला जा रहा है जबकि अनाज और गोबर, फसलों से संबंधित मानव जीवन के आवश्यक तत्व हैं। गोबर की खाद से प्राकृतिक गुणों से भरपूर गुणवत्ता वाली फसलों के विपरीत तकनीकी विकास, मशीनीकरण और हानिकारक रासायनिकों का खेती–बाड़ी में उपयोग किये जाने से कैंसर जैसी अनेक घातक बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। मिट्टी की उर्वरता उपजाऊपन खत्म होकर बंजर बन रही हैं। नदियों, नहरों, कुओं, तालाबों आदि जलस्रोत जहरीले अपशिष्टों से दूषित होकर मानव जीवन, पशु–पक्षियों और पर्यावरण के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। इन सब भयावहताओं से बचने के लिए सबको आदिवासी समुदायों की परम्परागत जीवन शैली और पुरखों की तकनीक का उपयोग करना चाहिए।

पशु–पक्षियों और पर्यावरण के उचित संरक्षण, संवर्धन पर विशेष कार्य करने चाहिए। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देकर स्वस्थ अन्न–धान की फसलों से स्वस्थ जन जीवन की नींव रखनी चाहिए। प्रकृति और जीव–जंतुओं का सरकारी योजनाओं से अनावश्यक विदोहन नहीं करना चाहिए। आदिवासी पुरखों की संयमित जीवनशैली को तथाकथित सभ्य धारा के लोगों को भी अपनाना चाहिए, जिससे कम से कम संसाधनों के उपयोग से पर्यावरण संरक्षण में सहयोगी बन सकें। जीव–जंतुओं, पशु–पक्षियों, पर्यावरण, पेड़–पौधों, नदी, झरनों, तालाबों, नहरों को प्रदूषण से मुक्त रखने के कार्य ज्यादा से ज्यादा करने चाहिए। पाखण्डों और संस्कृति के नाम पर भावनाओं का हवाला देकर बारूदी पटाखे जलाने वालों पर सख्त प्रतिबंध और कड़ी से कड़ी सजा होनी चाहिए। त्यौहारों पर ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे सबको स्वस्थ जीवन जीने का अधिकार मिले। 'सब जीओ और जीने दो' की विचारधारा को अपनाये तो कई समस्याओं का समाधान हो सकता है। प्रकृति और माता–पिता जो हमें जीवन देते हैं, उन्हीं की पूजा करनी चाहिए। संपूर्ण जीव जगत और मानवता के लिए प्रकृति से जुड़े आदिवासियों और किसान वर्गों के उत्सव, त्यौहार फसल चक्र और ऋतु परिवर्तन के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए है, जो जीवन चक्र के साथ हमेशा चलते रहते हैं।

❑❑❑

प्रदूषण की समस्या

मोहर सिंह मीणा
सहायक महाप्रबंध
इंडियन बैंक, अं. का. मध्य

जूझ रहा है समस्त संसार, हो प्रकृति या मानव जाति
सब पर है इसका घोर प्रहार।
बढ़ रहा है बीमारियों का प्रकोप, जीवन हो गया है दुश्वार,
मिट रही हरियाली पृथ्वी से, वातावरण हो गया है बेकार।

कहीं जल की समस्या के कारण,
सूखे और भुखमरी की है मार,
कहीं प्रदूषण का संकट, जो कर रहा है सबको बीमार।
जनसंख्या वृद्धि के कारण,
प्रदूषण ने तो छीन लिए सबके अधिकार,
जिसके कारण ही, बेरोजगारी ने लिए हैं अपने पैर पसार।

स्वयं ही मानव ने अपने, दुष्कर्मों से लिया जीवन बिगाड़,
कर लिया स्वयं को पीड़ित और कर लिया धरा पे मानवता को नाराज़।

कुछ चेतो मानव, तुम जगे नहीं तो बहुत पछताओगे,
करते रहे यूँ दूषित पृथ्वी को तो,
तुम हरियाली कहाँ से पाओगे।
करते रहे जो वायु प्रदूषित, एक पल भी न जी पाओगे,
खुली हवा में जो साँस हो लेते,
एक श्वास को भी तरस जाओगे।

कुछ चेतो मानव, तुम जगे नहीं तो बहुत पछताओगे,
जल को भी तुमने किया प्रदूषित, पृथ्वी पर सब बंजर पाओगे।
बिन जल की बूँदों के तुम, तनिक भी जी न पाओगे,
कुछ चेतो मानव, तुम जगे नहीं तो बहुत पछताओगे।

रोको ध्वनि प्रदूषण को तुम, वरना मानसिक रोगी बन जाओगे,
इतराते हो जो अपनी बुद्धिमत्ता पर,
जीवन में तनिक रस न पाओगे।

कुछ चेतो मानव, तुम जगे नहीं तो बहुत पछताओगे,
रोको जन–प्रदूषण शीघ्र ही, वरना बेघर तुम हो जाओगे।

रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या से,
तुम कभी पार न पाओगे,
कुछ चेतो मानव, तुम जगे नहीं तो बहुत पछताओगे।

हे मानव ! मानव हो तुम, तो उच्च मानसिकता को अपनाओ,
हो स्वयं भी जागरुक, और जागरूकता की एक मुहिम चलाओ।
प्रदूषण की समस्या से अवगत कर, सब में नई चेतना जगाओ,
इसके दुष्परिणामों से, सबको तुम परिचय करवाओ।

अगर बचाना है पृथ्वी पर जीवन,
वातावरण को तुम शुद्ध बनाओ,
रखो स्वच्छ वायु, पृथ्वी और जल,
प्रतिदिन एक नया वृक्ष लगाओ।
बनो एक जिम्मेदार नागरिक,
अपनी तुम जिम्मेदारी निभाओ,
देकर अपना छोटा सा सहयोग,
सरकार का तुम साथ निभाओ।

अगर चाहते हो निरोगी जीवन तुम मानव,
धरती से प्रदूषण हटाओ,
स्वच्छ, सुन्दर समाज बनाकर,
जीवन को अपने स्वस्थ बनाओ।
ऐ मानव! मानव हो तुम, तो उच्च मानसिकता को अपनाओ,
हो स्वयं भी जागरुक, और जागरूकता की एक मुहिम चलाओ।

❑❑❑

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। – डॉ. संपूर्णानंद

महान आदिवासी नेता– जयपाल सिंह मुंडा

डॉ. गौतम कुमार मीणा
उप प्रबंधक (राजभाषा)
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय – II,

'मरड गोमके' महान अगुआ, सर्वोच्च नेता जयपाल सिंह मुंडा का पारिवारिक नाम प्रमोद पाहन था। आदिवासी समाज में उन्हें लोकप्रिय उपनाम मरड गोमके के नाम से जाना जाता है। जयपाल सिंह मुंडा भारतीय आदिवासियों और झारखण्ड आन्दोलन के सर्वोच्च नेता रहे हैं। इनका जन्म 3 जनवरी, 1903 को टकरा पाहन टोली गाँव राँची में हुआ था। आठ भाई–बहनों में ये दूसरे नंबर के थे। इनकी माँ का नाम राधामुनी और पिता का नाम अमरू पाहन था। वे मुंडा आदिवासी समुदाय के हैं और उनके पिता परंपरागत रूप से मुंडा समाज के 'पाहन' थे। 'पाहन' सामाजिक जिम्मेदारी का पद है जिसमें समाज के पारम्पारिक, धाद्रमक, आध्यात्मिक और नैतिक मुखिया की भूमिका सर्वोच्च होती है। उनकी न्यायप्रियता की चर्चा दूर–दूर तक फैली हुई थी। जयपाल सिंह मुंडा के चरित्र, व्यक्तित्व निर्माण में उनके पिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संत पॉल स्कूल के प्रधानाध्यापक कैनोन कॉसग्रेव की पारखी नजरों ने प्रमोद पाहन की बहुमुखी मेधा को पहचान कर उसे इंग्लैण्ड ले गए। कुशाग्र बुद्धि व विलक्षण प्रतिभा के धनी जयपाल सिंह मुंडा ने पीएचडी ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय इंग्लैण्ड से प्राप्त की। वे खेलकूद में जैसे हॉकी, फुटबाल, क्रिकेट, रग्बी, घुड़सवारी आदि के बेहतरीन खिलाड़ी रहे हैं, भारतीय ओलम्पिक हॉकी टीम के कप्तान बने। भारत को ओलम्पिक में गोल्ड मेडल उनकी प्रतिभा की गौरवशाली मिसाल है।

जयपाल सिंह मुंडा राजनीतिज्ञ, कुशल वक्ता, पत्रकार, लेखक, संपादक, लेक्चरर, प्रिंसिपल, विदेश मंत्री, प्रथम आई सी एस चयनित भारतीय, वार्डन, कैशियर, 4 बार सांसद व उप मुख्यमंत्री भी रहे हैं।

"आदिवासी इस देश का प्रथम नागरिक है। मैं उन लाखों अज्ञात लोगों की ओर से बोलने के लिए यहाँ खड़ा हुआ हूँ, जो सबसे महत्वपूर्ण है, जो आजादी के अनजान लड़ाके हैं, जो भारत के मूल निवासी हैं। जिनको बैकवर्ड ट्राइब्स, प्रिमिटिव ट्राइब्स, क्रिमिनल ट्राइब्स और जाने क्या–क्या कहा जाता है। पर मुझे अपने जंगली होने पर गर्व है क्योंकि यह वही संबोधन है जिसके द्वारा हम लोग इस देश में जाने जाते हैं।"

1927 में आई सी एस के लिए चयनित हुए। ब्रितानी काल आई ए एस परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले पहले भारतीय और पहले आदिवासी थे।

1928 में आई सी एस का त्याग कर भारतीय ओलम्पिक हॉकी टीम के कप्तान बने। भारत को ओलम्पिक में गोल्ड मेडल दिलाया।

1931 में तारा मजूमदार से दार्जलिंग में विवाह किया। अफ्रीका घाना में प्रिंसिपल रहे। बीकानेर स्टेट में विदेश मंत्री रहे। राजकुमार कॉलेज रायपुर में प्रिंसिपल भी बने।

1938 – 39 में झारखण्ड में आदिवासी महासभा से जुड़े और उसकी अध्यक्षता की।

1940 में उन्होंने माना कि कलम तलवार से ज्यादा ताकतवर हो सकती है इसलिए अंग्रेजी, हिंदी, मुडारी भाषा में 'आदिवासी सकम' साप्ताहिक पत्र की शुरूआत की।

1946 में चुनाव में खड़े हुए और हार गये।

1948 में 1 जनवरी को सरायकेला–खरसावां में ओड़िसा सरकार द्वारा आदिवासियों का नरसंहार किया गया था जिसके विरोध में 11 जनवरी को चायबबासा में लाखों की तादाद में आये विशाल जन प्रदर्शन को संबोधित किया।

2 दिसम्बर को संविधान से आदिवासी शब्द हटाने का विरोध किया। आदिवासी शब्द की जगह 'अनुसूचित जनजाति' शब्द का प्रस्ताव डॉ. अम्बेडकर ने पेश किया था।

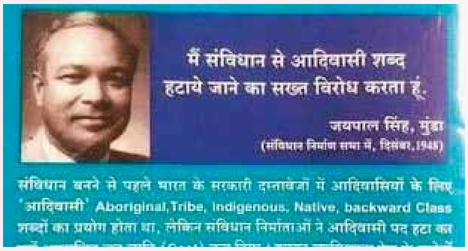

संविधान निर्माण सभा की बैठकों में जयपाल सिंह मुंडा ने आदिवासी शब्द की पैरवी करते हुए कहा था ''संविधान आपका है। सीमाएँ आपकी है और संप्रभुता आपकी है। झण्डा आपका है। हमारा क्या? क्या है इस नये आजाद भारत में जो हर दृष्टि से दूसरों के साथ–साथ आदिवासियों के लिए भी एक समान है ?''

नया भारत आदिवासियत के दर्शन को स्वीकार करें।

1950 में झारखण्ड पार्टी की घोषणा की। वे ध्यानचंद हॉकी टूर्नामेंट के अध्यक्ष भी बने।

उन्होंने 1952 में प्रांतीय एवं केन्द्रीय चुनावों में भाग लिया। झारखंड पार्टी के 32 विधायक और 4 सांसद पार्टी के चुनाव चिन्ह मुर्गा' पर जीते। जयपाल सिंह मुंडा स्वयं रांची पश्चिमी (खूंटी) संसदीय क्षेत्र से निर्वाचित हुए। इसी वर्ष तारा मजूमदार के साथ कानूनी संबंध विच्छेद हुआ। 7 मई को जहांआरा जयरत्नम के साथ दूसरा विवाह किया। 1958 में पत्नी जहांआरा राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुई और बाद में इंदिरा गांधी के मंत्रीमण्डल में परिवहन उपमंत्री, केंद्रीय शिक्षा उपमंत्री बनी।

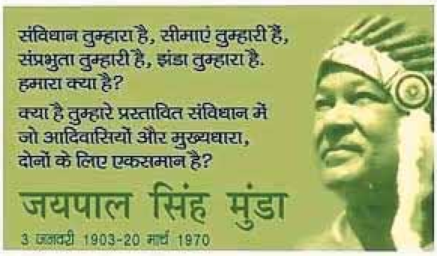

भारत के शोषित उत्पीड़ित आदिवासी समुदाय की जिस लड़ाई को बीसवीं सदी की शुरूआत में राजनीतिक तौर पर बिरसा मुंडा के उलगुलान ने उठाया था, उसे स्थापित करने का श्रेय जयपाल सिंह मुंडा को है। इसकी शुरूआत उन्होंने आदिवासी महासभा को झारखंड पार्टी में बदल कर की।

संविधान सभा की बैठकों में जयपाल सिंह मुंडा ने देश के मूल मालिक आदिवासियों के हक अधिकारों की बातों को पुरजोर रखने की कोशिश की ''अगर कोई देश में सबसे ज्यादा दुर्व्यवहार का शिकार हुआ है तो वह हमारे लोग हैं। पिछले पांच हजार सालों से उनकी उपेक्षा हुई हैं और उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया है। मैं जिस सिंधुघाटी सभ्यता का वंशज हूँ उनका इतिहास बताता है कि आप में से अधिकांश लोग, जो यहॉं बैठे हैं, बाहरी हैं, घुसपैठिए हैं। जिनके कारण हमारे लोगों को अपनी धरती छोड़कर जंगलों में जाना पड़ा इसलिए यहाँ जो संकल्प पेश किया गया है, वह आदिवासियों को लोकतंत्र सिखाने नहीं जा रहा। आप सब आदिवासियों को लोकतंत्र सिखा ही नहीं सकते। बल्कि आपको ही उनसे लोकतंत्र सीखना हैं।''

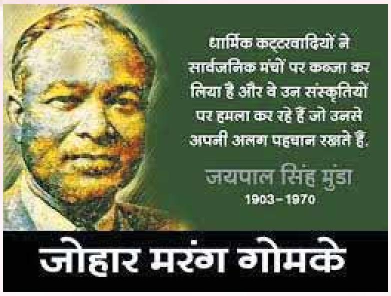

जयपाल सिंह मुंडा देश के पहले आदिवासी थे जो 1952 से 1967 तक चार बार लगातार सांसद रहें।

ऑटोबायोग्राफी–आत्मकथात्मक संस्मरण (1967) 'लो बिर सेंदरा' लिखने वाले वे पहले भारतीय आदिवासी है।

3 सितंबर 1963 रांची में राज्यपाल ने जयपाल सिंह मुंडा को उप मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलायी। पंचायत एवं सामुदायिक विकास विभाग का प्रभार मिला। 2 अक्टूबर को मंत्री पद से हटाये गये। मात्र 29 दिन उप मुख्यमंत्री रहे। 1970 में 13 मार्च को रॉंची में आयोजित झारखण्ड पार्टी के सम्मेलन में पार्टी में लौटने की सार्वजनिक घोषणा की। उन्होंने 19 मार्च को कोलकाता में पूर्व पत्नी तारा मजूमदार से मुलाकात की थी। 20 मार्च को दिल्ली में संदेहास्पद अवस्था में मृत्यु हो गई। अंतिम संस्कार मुंडा विधि–विधान से करके टकरा पाहन टोली गाँव में माता–पिता के बगल में दफनाया गया।

जयपाल सिंह मुंडा ''आदिवासी इस देश का प्रथम नागरिक है। मैं उन लाखों आज्ञात लोगों की ओर से बोलने के लिए यहॉं खड़ा हुआ हूँ, जो सबसे महत्वपूर्ण है, जो आजादी के अनजान लड़ाके हैं, जो भारत के मूल निवासी हैं। जिनको बैकवर्ड ट्राइब्स, प्रिमिटिव ट्राइब्स, क्रिमिनल ट्राइब्स और जाने क्या–क्या कहा जाता है। पर मुझे अपने जंगली होने पर गर्व है क्योंकि यह वहीं संबोधन है जिसके द्वारा हम लोग इस देश में जाने जाते हैं।''

❒❒❒

राजभाषा गतिविधियाँ

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इण्डिया, आंचलिक कार्यालय दिल्ली द्वारा द्वारा 3 अप्रैल 2022 को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन का आयोजन किया गया। सम्मलेन में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग से निदेशक, श्री बी एल मीणा तथा वित्तीय सेवायें विभाग से उप निदेशक, श्री भीम सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर राजभाषा प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक दिल्ली क्षेत्र की जून 2022 की तिमाही के लिए आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान मुख्य अतिथि, श्री भीम सिंह, उप निदेशक (राजभाषा), वित्तीय सेवाएँ विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के साथ मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री डमरूपाणि वी. एवं अन्य अधिकारीगण।

पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय पश्चिमी दिल्ली की राजभाषा वार्षिक समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे श्री विजेन्द्र सिंह, उप मंडल प्रमुख तथा समीक्षा करते हुए आंचलिक राजभाषा प्रभारी, श्री आशीष शर्मा, मुख्य प्रबंधक।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय में आयोजित 'हिंदी परिचर्चा कार्यक्रम' की अध्यक्षता करते हुए उप महाप्रबंधक, श्री रजनीकांत। दृष्टव्य हैं श्री अरविंद कुमार, सहायक महाप्रबंधक व अन्य अधिकारीगण।

श्री संजय कुमार, उप सचिव, (राजभाषा) वित्तीय सेवायें विभाग, वित्त मंत्रालय तथा श्री भीम सिंह, उपनिदेशक, वित्तीय सेवायें विभाग, वित्त मंत्रालय, पीएनबी प्रधान कार्यालय का राजभाषा अनुपालना संबंधी निरीक्षण करते हुए। दृष्टव्य हैं श्री बिंदर कुमार शर्मा, महाप्रबंधक, श्री एस.के. दाश, महाप्रबंधक, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) व अन्य अधिकारीगण।

विमोचन

दिल्ली बैंक नराकास की 56वीं छमाही बैठक में छमाही पत्रिका "बैंक भारती" के 27वें अंक का विमोचन करते हुए श्री बाबू लाल मीना, निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष– दिल्ली बैंक नराकास एवं मुख्य महाप्रबंधक (दिल्ली अंचल), पीएनबी, श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (का.)), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–I (दिल्ली), श्रीमती मनीषा शर्मा, सदस्य सचिव, दिल्ली बैंक नराकास एवं सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा, पीएनबी तथा श्री बलदेव मल्होत्रा, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा।

यूनियन बैंक, दिल्ली अंचल द्वारा आयोजित 'हिंदी उत्सव' के दौरान, वर्ष 2022–23 संदर्भ साहित्य का विमोचन करते हुए श्री के. पी. सिंह, उप निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, श्री समीर बाजपेयी, अध्यक्ष, दिल्ली (बैंक) नराकास एवं अन्य अधिकारीगण।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय ई–राजभाषा सम्मेलन के दौरान "हमारे ऋण उत्पाद" का विमोचन करते हुए श्री बी.एल. मीना, निदेशक, राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय, श्री जे. एस. साहनी, महा प्रबंधक एवं अंचल प्रबंधक तथा अन्य अधिकारीगण।

आईडीबीआई बैंक में हिंदी पखवाड़े के शुभारम्भ अवसर पर बैंक की स्टाफ सदस्या सुश्री अर्चना भारद्वाज की पुस्तक का विमोचन करते हुए मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, श्री रंजन कुमार तथा उच्चाधिकारीगण।

भारतीय रिज़र्व बैंक कार्यालय की गृह पत्रिका 'मेधा' का विमोचन करते हुए क्षेत्रीय निदेशक, श्री विवेक अग्रवाल, महाप्रबंधक सुश्री एन मोहना, बैंकिंग लोकपाल, श्री आर. के. मूलचंदानी और सुश्री सुचित्रा मौर्या।

एक दिन की बात

सुनैना रेड्डी
आईडीबीआई बैंक
दिल्ली, क्षेत्रीय कार्यालय

कविता दीदी और मैं रिश्ते में देवरानी–जेठानी थी पर मेरी शादी के बीस साल बाद भी कोई अंजान व्यक्ति हमें सगी बहनें ही समझता था। नई नवेली दुल्हन बनकर आई थी तो दीदी ने ससुराल में रचने बसने में, सभी की जरूरतों को पहचानने में और सबसे महत्वपूर्ण अपने देवर यानि मेरे पति के साथ ताल–मेल बैठाने में मेरा पूर्ण सहयोग दिया। शादी के पहले हफ्ते में ही लगने लगा कि कितने साल हो गए इस परिवार के साथ रहते हुये।

जनवरी में शादी हुई थी और मार्च में ही मेरी एक कंपनी में नौकरी लग गयी थी। दीदी भी एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाया करती थी। हम दोनों सुबह एक साथ काम खत्म करके अपने–अपने काम पर चले जाया करते थे। हमारे पीछे सासु माँ पूरा घर संभालती थी। ससुर जी भी काफी बुजुर्ग थे और माँ उनकी भी देखभाल करती थी। उन्होंने एक दिन भी काम ज्यादा होने का एहसास नहीं कराया, सारा काम मिलजुल कर कब खत्म हो जाता था पता ही नहीं चलता था।

दीदी दोपहर में स्कूल से आते ही माँ के साथ काम में लग जाती थी। मेरा शाम सात बजे के बाद ही वापिस आना होता था। दीदी तब तक रात का खाना बना लिया करती थी। एक दिन भी ऐसा नहीं हुआ कि मैंने ऑफिस से वापिस आकर खाना बनाया हो। रात को हम एक साथ खाना खाकर अपने–अपने कमरे में सोने चले जाते। दीदी मायके भी गई होती थी तो माँ सारा काम अकेले ही संभाल लेती थी। मेरे मना करने पर कहती तुम थकी आती हो, ताकत ही कहाँ बचती होगी। तुम थोड़ा आराम करके खाना खा लो फिर बाकी काम देख लेना। कभी कम ज्यादा का कोई भेदभाव ही नहीं हुआ।

ऑफिस की सहेलियाँ भी बोलती थी, तुम्हें घर की चिंता नहीं होती, बेटी ने खाना खाया या नहीं, वो स्कूल से कब आई? वो ट्यूशन टाइम पर गई या नहीं। मैं हँस कर कह देती, माँ और दीदी है न, देख लेंगे। बेटी अकेली तो थी नहीं, दीदी के दोनों बेटों के साथ पूरा दिन खूब मस्ती करती और खुश रहती।

अब तक सुख से शादी को 12 साल हो चुके थे। मेरी गोद में एक छोटा कान्हा भी आ गया था। ससुर जी चल बसे थे। उनके जाने के बाद माँ ने पुश्तैनी मकान बेच दिया था। दोनों बेटों को बराबर का फ्लैट लेकर दे दिया था। उनका कहना था अब बच्चे बड़े हो रहे हैं, तुम्हारी अपनी–अपनी जरूरतें हैं। मेरे सामने सब अपने–अपने घरों में खुश रहो।

दीदी के बच्चे बड़े हो गए थे, तो माँ ने हमारे साथ रहना ही स्वीकार किया। हर इतवार को या बीच–बीच में दीदी के यहाँ भी जाना होता था। दीदी की बनाई हुई कढ़ी मुझे बहुत पसंद थी तो वो बनाकर भेज दिया करती थी।

अचानक एक दिन दीदी को बुखार हुआ तो हम सब बहुत चिंतित हो गए क्योंकि एक महीने तक उन्हें आराम नहीं हुआ। इस तरह करते–करते छः महीने बीत गए। अब दीदी बहुत कमजोर हो गई थी। बुखार होता फिर ठीक हो जाता। सभी टेस्ट करवाने पर कुछ नहीं निकला। दीदी ने स्कूल भी छोड़ दिया था।

दीदी घर से बाहर भी कम निकलती थी। माँ भी चिंता करती थी तो उनके पास जाती रहती थी। फिर भी धीरे–धीरे सब सही चल रहा था। दीदी जब ठीक होती तो आ जाया करती थी। तो हम काफी–काफी देर तक पुराने दिनों को याद किया करते थे। पर कभी खाली हाथ नहीं आती थी। चाहे एक बिस्कुट ही क्यूँ न लेकर आये, पर खाली हाथ कभी नहीं आई।

एक दिन अचानक मेरे पति का फोन आया, मैं ऑफिस में थी, मेरे कान सुन्न पड़ गए। मुझे समझ ही नहीं आया, मैंने उन्हें दोबारा फोन किया और पूछा आपने क्या कहा और वे बोले कविता भाभी नहीं रही। मैंने अपने दोस्त, सखा, बड़ी बहन को खो दिया था... दीदी को हार्ट अटैक पड़ा था और अस्पताल जाने के रास्ते में ही उन्होंने हमें छोड़ दिया... बच्चों को तो कई महीने लगे समझने में और हमें भी...

दीदी का प्यार,
करवाचौथ का त्यौहार
आज भी ताजा है,
उनकी हर पुकार...

बैंकिंग व्यवसाय में राजभाषा कितनी लाभकर

प्रिय रंजन
मुख्य प्रबंधक
पंजाब नैशनल बैंक
शाखा – साउथ एक्सटेंशन

बैंकिंग क्षेत्र के लिए हिंदी सांविधिक अपेक्षाओं का अनुपालन मात्र नहीं है। ग्राहक सेवा और मार्केटिंग जैसे महत्वपूर्ण मसलों में ग्राहक की भाषा ही उन्हें जोड़ने का कार्य करती है। इसलिए आवश्यक है कि ग्राहक वर्ग बढ़ाने और व्यवसाय की लाभप्रदता बनाए रखने के लिए हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को ज्यादा से ज्यादा अपनाया जाए। बैंकिंग हिंदी के क्षेत्र में मूल लेखन की कमी काफी दिनों से महसूस की जा रही थी। वित्तीय व्यवसाय सामान्यजन से जुड़ा है। पिछले 2 दशक में बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों का स्वरूप काफी बदल गया है। घंटों–घंटों कतार में खड़े रहने वाला, थका देने वाला माहौल आज कितना आसान हो गया है। नई तकनीक के प्रचार व प्रसार, उसकी महत्ता, गुण, उपयोगिता ने आज मानव को उसके घर में ही सीमित कर, उसे पूरी तन्मयता के साथ नये–नये साधनों का प्रयोग करते हुए, एक छोर से दूसरे छोर तक संपर्क करने व लेन–देन करने के योग्य बना दिया है। आज तकनीक चाहे कितनी भी आधुनिक हो जाए, नये–नये आयामों को प्राप्त कर ले, फिर भी मूल इकाई क्या है, जिससे हमने लक्ष्यों को पाना है, कारोबार को बढ़ाना है, वह है–ग्राहक, उपभोक्ता, एक आम आदमी, जो हिंदी ही जानता है, हिंदी ही समझता है, हिंदी ही बोलता है। बैंकिंग व अन्य व्यवसाय में हिंदी का महत्व और भी बढ़ जाता है। आपको अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार हिंदी भाषा को बिंदु बना कर, उसे लक्ष्य मान कर करना होगा। बदलते वित्तीय परिवेश में हिंदी को जितना अधिक लोगों के बीच लायेंगे,उन्हें हर बात हिंदी में ही समझायेंगे, तभी वह दिल से–मन से जुड़ पाएंगे। वह आपके कार्य, व्यवहार की, योजनाओं की चर्चा करेंगे और लोग जुड़ते चले जाएंगे। वास्तव में यही तो बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में हिंदी के महत्व को उजागर करता है।

भारत गाँवों में बसता है और सबसे अधिक आवश्यकता इन्हीं ग्रामीण लोगों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ने की है। यह वर्ग अधिकांश हिंदी भाषा ही समझता है और बोलता है। आज बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में प्रतिस्पर्धा है, चुनौती है, आगे बढ़ने की होड़ है, क्षेत्र विस्तृत ही होता जा रहा है, तो ऐसे में तो हिंदी का महत्व और भी बढ़ जाता है। जो भी तकनीक आम आदमी से जुड़ी है, उसमें असीम वृद्धि की हमारे यहाँ गुंजाइश है, अपेक्षा है। हमारी अर्थव्यवस्था उठान पर है, इसलिये तकनीक का प्रयोग करने वालों की संख्या में आश्चर्यजनक बढ़ोतरी हुई है। यह बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों में हिंदी के महत्व को देने व उसके प्रचार–प्रसार के कारण ही है। आज सभी सरकारी व निजी बैंक, बीमा कम्पनी में भी प्रयोग में आने वाली सारी सामग्री, दस्तावेजी काम अधिकतर हिंदी में है, या हिंदी–अंग्रेजी में है। यहाँ तक कि विदेशी बैंक भी हिंदी का एक स्तर तक प्रयोग कर रहे हैं। संसार के सभी सभ्य और स्वाधीन देश अपना काम अपनी भाषा में करते हैं,पर भारत इसका अपवाद है ।

आजादी के 75 वर्ष बाद भी हमारा अधिकांश कार्य अंग्रेजी में हो रहा है, जबकि हिंदी सरल एवं वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी जानना, बोलना और लिखना पिछड़ेपन की निशानी नहीं, अपितु यह तो गरिमामयी राष्ट्रीय अभिव्यक्ति है। हिंदी राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता का प्रतीक ही नहीं, भारत की आत्मा की आवाज है। यही आवाज बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में हिंदी की महत्ता को समझते हुए जब गुंजायमान होगी, तो हिंदी हिन्द का गौरव होगी, माँ भारती के माथे का तिलक होगी । जब हिंदी का बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों में भरपूर प्रयोग होगा, जन–जन तक लोगों को अपनी भाषा में योजनाओं की जानकारी मिलेगी, उनका लाभ उठा कर, अपने व्यवसाय को, रोजगार को, अपनी दुकान, अपने कार्य को बढ़ावा देकर गति देंगें,तो देश भी प्रगति के रास्ते पर चल पड़ेगा, दौड़ेगा, उम्मीदों के आसमाँ को अपने कदमों में ले आएगा। उसके साथ–साथ राष्ट्र का भी विकास होगा, तरक्की के रास्ते पर अग्रसर होगा, विश्व में बुलंदियों पर अपने भारत का नाम होगा। वित्तीय व्यवसाय में हिंदी को तभी सम्पूर्ण महत्व मिल पाएगा, जब सूचना प्रौद्योगिकी को अपने अंदर आत्मसात कर लेगी। यह तकनीक भी अपने प्रवाह के लिये भाषा का माध्यम ढूँढती है और जनभाषा से बेहतर कोई अन्य सशक्त माध्यम नहीं हो सकता। इसी कारण ही विश्व के किसी भी कोने तक हमारा संपर्क हो

गया है। आज हम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा अपने घर पर या कार्यालय में बैठे अपने अन्य कार्यालयों में काम कर रहे लोगों से संवाद कर सकते हैं। ऐसे ही मुख्यमंत्री अपने सचिवालय से ही सभी जिलाधीशों से एक ही समय में बात कर सकते हैं। यह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग अधिकतर हिंदी में ही होती है। आम कंप्यूटर उपभोक्ता के कामकाज से लेकर डेटा बेस तक में हिंदी पूरी तरह उपलब्ध है। यह बात अलग है कि अब भी हमें बहुत दूर जाना है, बहुत आगे जाना है, पर एक बड़ी शुरुआत हुई और इसे होना ही था। आज घर बैठे ,भाषा चयन करके मोबाइल, लैपटॉप पर बैलेंस, स्टेटमेंट देखिए, नेट बैंकिंग के माध्यम से लेन–देन कीजिये, कितना आसान हो गया है सब–कुछ, वो भी सब हिंदी में। आखिर जन–जन की भाषा–हिंदी, दुलारी हिंदी, करोड़ों लोगों की हृदय स्पंदन कैसे पीछे रह सकती है। बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में हिंदी के महत्व को बढ़ाता यह प्रयास अनवरत निरंतर है–

हिंदी का अधिकतम प्रयोग ही, बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय को प्रगति देगा, उन्नति के नए कीर्तिमान स्थापित करेगा, आखिर अधिकांश लोगों की भाषा, जन–जन की भाषा को कैसे नकार सकते हैं। हमें तो स्वयं को हिंदी के प्रयोग में ढालना ही होगा। यह तो अपरिहार्य है, कारण स्पष्ट है, हमारे पास तो संख्या बल है, युवा शक्ति है, पढ़े–लिखे, समझदार और मातृभाषा हिंदी को महत्व देने वालों की तादाद करोड़ों में है। अगर इन करोड़ों तक पहुँचना है, बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में निरंतर विस्तार लाना है, लाभप्रदता बढ़ानी है, विकास की ऊँचाइयों को छूना है, रोजमर्रा के काम में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना ही है, सरलतम, सुलभ ढंग से नित नई तकनीक का प्रयोग कर, हर आदमी की पहुँच में, आम आदमी की पहुँच में ला कर ही बैंकों व अन्य सभी वित्तीय संस्थानों के लिये अपने लक्ष्यों को पाना आसान होगा। बैंकिंग कारोबार समाज के अंतिम छोर तक तभी पहुँच सकता है, जब हम आम आदमी की भाषा का प्रयोग करें। क्षेत्रीय भाषाओं की इसमें अहम भूमिका है।

❑❑❑

जरुरी है

हृदय कुमार
राजभाषा अधिकारी
पंजाब नैशनल बैंक
राजभाषा विभाग, प्र.का.

जैसे सूरज के निकलने के लिए
हमेशा रात का ढलना जरुरी है।
वैसे ही हकीकत में बदलने के लिए
आँखों में ख्वाब का पलना जरुरी है।।

जैसे सूरज की भांति चमकने के लिए
सूरज की तरह जलना जरुरी है।
वैसी ही स्वर्ण से कुंदन बनने के लिए
सोने की भांति तपना जरुरी है।।

जैसे पत्थर से पूजनीय मूरत बनने के लिए
छैनी–हथौड़ी की हर चोट सहना जरुरी है।
वैसे ही दुनिया में एक मक़ाम पाने के लिए
उसके हर ताने को नजरंदाज करना जरुरी है।।

जैसे खुद को हर हाल में खुश रखने के लिए
दु:ख और तकलीफ पर मुस्कुराना जरुरी है।
वैसे ही मुश्किल वक्त में दिल को समझाने के लिए
सब ठीक है कहकर बेफकूफ बनाना ज़रूरी है।।

जैसे वक्त के साथ–साथ खुद चलने के लिए
खुद को हर दिन बेहतर बनाना ज़रूरी है।
वैसे ही दुनिया में हमेशा आगे बढ़ने के लिए
दुनिया के लिए बहरा बन जाना जरुरी है।।

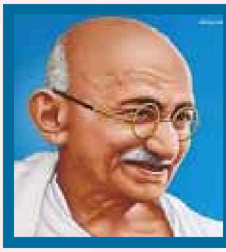

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

– महात्मा गाँधी

दूल्हा बिकता हैः दहेज–एक कुरीति

शिल्पा बंसल
सहायक प्रबंधक
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
प्रशांत विहार शाखा

उसकी आँखे नम थी। चेहरे पर एक अजीब–सी उदासी थी। मैं दरवाजे पर खड़ी उसको देख रही थी। तभी आंटी जी चाय की ट्रे लिये कमरे में आई और बोली ''अनीता, देख तो कौन आया है? कहाँ खोई हुई है, बैठने को भी नहीं बोला रीतू से।''

अनीता की शादी टूटने की खबर सुनके मैं उससे मिलने उसके घर गई थी। हँसने मुस्कुराने वाली जिन्दादिल अनीता, इतनी शांत और चुप–सी हो गई थी।

अनीता ने जैसे ही मुझे देखा, आँखें पोंछते हुए हड़बड़ाते हुए मुझसे बोली,''रीतू, तू...सॉरी.. मुझे पता ही नहीं चला, तू कब आई?...आ बैठ..?''। अनीता ने मुझे कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और टेबल पर रखा चाय का कप मेरी तरफ बढ़ाया। एक अजीब–सी खामोशी थी अनीता के चेहरे पर। उसके चेहरे की उदासी और आँसूओं से भीगी पलकें उसके दिल का सारा हाल बयान कर रही थी। हाथ में दुपट्टे का किनारा पकड़े आँखे नीचे करके वो एकदम चुपचाप कहीं खोई हुई–सी बैठी रही।

मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि आखिर बोलूं तो क्या। मैं कुछ बोलती इससे पहले ही अनीता की आँखो से आसूं छलकने लगे। रोते हुए बोली, ''रीतू... बता मैं क्या इतनी बुरी हूँ? पैसों के लिए रिश्ता ही तोड़ दिया। उन्होंने एक बार भी मेरे बारे में नहीं सोचा कि उनके इस कदम से मेरे और मेरे परिवार का क्या होगा? क्या गुजरेगी सब पर? बाऊजी इतने पैसों का इंतजाम अचानक कैसे करेंगे? अगर पैसे ही चाहिए थे तो अपना रिश्ता मेरे लिये लेके क्यों आये थे? मेरे बाऊजी ने तो पहले ही सब बता दिया था हमारे घर के हालात के बारे में। मेरी शादी.......टूट....''। बस इतना कहते ही वो मुझसे लिपट के फूट–फूट के रोने लगी। उसकी ये हालत देखकर मेरी आँखे भी भर आई।

अनीता बहुत सुंदर, पढ़ी–लिखी और समझदार लड़की है। अनीता की सगाई हुए 6 महीने हो गये थे। एक हफ्ते में उसकी शादी होने वाली थी। अनीता का मंगेतर राजेश किसी प्राइवेट कंपनी में नौकरी करता था। अनीता के लिये उनकी तरफ से खुद रिश्ता आया था। सब कुछ अच्छा चल रहा था। अनीता और उसके घरवाले इस रिश्ते से बहुत खुश थे। शादी की लगभग सभी तैयारियाँ हो चुकी थी। शादी के कार्ड बंट चुके थे। सारी खरीदारी हो चुकी थी। अचानक कल शाम राजेश के पिता का अनीता के पिता के पास फोन आया और उन्होंने रिश्ता ही तोड़ दिया। कारण था कि चार दिन पहले लड़के वालों की अचानक हुई स्विफ्ट कार की माँग जो अनीता के पिता पूरी नही कर सकते थे। पर अनीता को राजेश पर पूरा भरोसा था कि वो उससे शादी जरुर करेगा। अनीता ने भी कल फोन पर राजेश से बात की पर राजेश ने भी इसे उसके परिवार का फैसला बताया और फोन काट दिया।

अनीता के पिता कपड़ों के छोटे से व्यापारी है। ज्यादा हैसीयत ना होते हुए भी 8 लाख रुपये शादी में लगा रहे थे। पर लड़के वालों की इस माँग को पूरा करना उनके लिये संभव नहीं था। अनीता की दो छोटी बहनें और भी हैं। घर में कमाई का साधन सिर्फ उसके पिता की आमदनी ही है। अनीता के पिता ने लड़के वालों को बहुत समझाने की कोशिश की पर वो एक ना माने।

अनीता इस रिश्ते से बहुत खुश थी। राजेश से इतने समय में एक जुड़ाव–सा हो गया था। पर शादी के टूट जाने से वो बिल्कुल टूट गई थी।

मुझसे उसकी ये हालत देखी नहीं जा रही थी। उसकी सबसे अच्छी दोस्त होते हुए भी मैं उसकी इस तकलीफ को कम नहीं कर सकती थी। सुबह आंटी का फोन आते ही मैं अनीता से मिलने दौड़ी चली आई। इन सबसे अनीता और उसके परिवार वालों पर जो गुजर रही है, तो सोचती हूँ ''एक तरह से शायद अच्छा ही हुआ। अगर शादी के बाद ऐसा हुआ होता तो ....''।

दहेज एक ऐसी कुरीति है जिसकी वजह से कितनी ही लड़कियाँ बिन ब्याही बैठी हैं। कई लड़कियों को इसी वजह से अपनी जान तक गंवानी पड़ी है। लड़की के पैदा होते 55ही उसके माता–पिता उसकी शादी के लिये पैसे जोड़ना शुरु कर देते हैं। आज के जमाने में भी बहुत से लोगों के लिये मानो लड़की का कोई मोल ही ना हो। वो

कितनी पढ़ी–लिखी है, देखने में कैसी है, संस्कारी है, ये सब जैसे इतने मायने ही नहीं रखते हों। दहेज–लोभियों के लिये मायने रखता है तो पैसा। मायने रखता है तो ये कि लड़की के माता–पिता शादी में कितना लगायेंगे, वो कितना नकद देंगे, कौन–सी गाड़ी देंगे, रिश्तेदारों को क्या तोहफा देंगे, शादी किसी बैंक्वेट हॉल में करेंगे या फार्म हॉउस में।

लड़की के बारे में पूछने से पहले लड़के वाले लड़की के माता–पिता से पूछते हैं–आपका बजट क्या है? शादी में कितना लगाओगे? क्या ये सवाल एक रिश्ता जोड़ने के लिये आवश्यक है या इससे एक लड़की के माता–पिता की हैसियत का अंदाजा लगाया जाता है कि चलो लड़की वाले माँग पूरी कर सकते हैं तभी शादी की बात बढ़ायें।

लड़के के तो जैसे दाम तय हों। बैंकर है तो कितने, इंजीनियर है तो कितने, डॉक्टर है तो कितने। मानो लड़कों की सेल लगी हो बाजार में। जिसने ज्यादा दाम दिया लड़का उसका। सोचा है कभी एक लड़की को कैसा लगता होगा ये सोचकर कि शायद उसकी शादी इसलिये हो रही है क्योंकि उसके माता–पिता लड़के वालों की दहेज की माँग को पूरा कर पाये हैं।

समाज में दहेज को लेकर दोहरी राय रखने वाले भी कम नहीं। जो दहेज प्रथा उनकी लड़की की शादी में कुप्रथा लगती है, वही दहेज खुद के लड़के की शादी में लड़के के जन्म से लेकर अब तक हुये खर्चे की वसूली का जरिया बन जाता है।

कुछ लड़के वाले बोलते हैं हमें कुछ नही चाहिये पर रिश्ता हो जाने पर या शादी हो जाने के बाद तरह–तरह की माँग करना शुरु कर देते हैं। दहेज को शादी जैसे पवित्र बंधन का एक हिस्सा बना लिया है कि अगर कोई लड़का बिना दहेज के शादी करने को तैयार भी होता है तो लड़की वालों को संदेहजनक लगता है।

हालांकि आज बहुत से लड़के ऐसे भी हैं जो दहेज प्रथा के बिल्कुल खिलाफ हैं। पर इस प्रथा को जड़ से खत्म करना क्या मुमकिन है? शायद यह तभी संभव होगा जब शादियाँ लड़के–लड़की के गुणों व पसंद के आधार पर होगी ना कि लड़कियों को पैसो में तोलकर। तब शायद दूल्हा बिकेगा नहीं और लड़की दहेज की आग की लपटों में झुलसेगी नहीं।

❑❑❑

सतर्कता दिवस

पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली में स्टाफ सदस्यों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलवाते हुए श्री एस.पी. गोस्वामी, मंडल प्रमुख।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती के अवसर पर संसद मार्ग पर वित्तीय जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से निर्गम विभाग और बैंकिंग लोकपाल कार्यालय के समन्वय से एक वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए स्टाफ सदस्य।

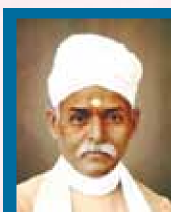

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेदभाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

– मदन मोहन मालवीय

महिला और समानता का अधिकार

कामयाबी की बुलंदियों को छूती, ये आज की औरत है।
हर दिशा में कामयाबी का परचम लहराती ये आज की औरत है।
मुश्किल, असंभव जैसे शब्दों को अपने कोश में ना लाती, ये आज की औरत है।
हर घर को रोशन करती ये आज की औरत है।

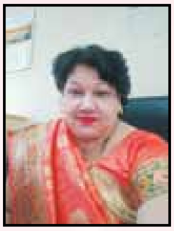

शर्मिला कटारिया
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली(मध्य)

आजकल की महिलाएं पुरुषों के समान ही नहीं बल्कि दो कदम आगे ही हैं। बस उनको दृढ़ निश्चय करना होता है, ठान लेना होता है कि कुछ कर दिखाना है। हमारे देश में ही नहीं, विश्व भर में महिलाओं को आजकल समान दर्जा प्राप्त है। महिला समानता दिवस प्रत्येक वर्ष 26 अगस्त को मनाया जाता है। न्यूजीलैंड विश्व का पहला देश है जिसने 1893 में महिला समानता की शुरूआत की। भारत में आजादी के बाद से ही महिलाओं को वोट देने का अधिकार तो प्राप्त था लेकिन पंचायतों तथा नगर निकायों में चुनाव लड़ने का कानूनी अधिकार 73वें संविधान संशोधन के माध्यम से स्वर्गीय प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के प्रयासों से मिला। इसी का परिणाम है कि आज भारत की पंचायतों में महिलाओं की 50 प्रतिशत से अधिक भागीदारी है।

महिलाओं को समानता का अधिकार यूँ ही नहीं मिल गया है। यह संघर्ष सालों–साल चला है। इसमें एक महिला वकील थेल्ला अब्जुग का योगदान सराहनीय है। इनके लम्बे संघर्ष के बाद 1971 से 26 अगस्त को न्यूजीलैंड में महिला समानता दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

भारत में महिलाओं को आजादी के बाद से ही मतदान का अधिकार तो दिया लेकिन वास्तव में समानता की बात करें तो भारत में आज़ादी के इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी महिलाओं की स्थिति गौर करने के लायक है। यहाँ वे सभी महिलाएं नज़र आती हैं, जो सभी प्रकार के भेदभाव के बावजूद प्रत्येक क्षेत्र में एक मुकाम हासिल कर चुकी हैं और सभी उन पर ही गर्व महसूस करते हैं। परन्तु उस कतार में उन सभी महिलाओं को भी शामिल करने की जरूरत है जो हर दिन अपने घर में और समाज में असमानता झेलने को विवश हैं। इस चंगुल से निकलने का एकमात्र साधन शिक्षा है। हमें बहनों, बेटियों को शिक्षित करना है क्योंकि शिक्षा ही वह गहना है जिसे पहनकर हर नारी चमकेगी, कामयाबी की बुलंदियों को छुएगी और हर कोई उन्हें देखकर गौरवान्वित महसूस करेगा। हमें उनमें इस भावना को जागृत करना हैः –

सत्य का मार्ग दिखाने वाली, रामायण हो, गीता हो, तुम साहस, त्याग, दया, ममता की अवतार हो तुम। आँधी या तूफान घिरा हो, तुम ना रुकने वाली हो, शिक्षा हो या अर्थ जगत, तुम पुरुषों के समान हो। हर पद की सच्ची अधिकारी हो तुम, नये प्रतिमान सृजन के तुम्हें अपने हाथों से गढ़ते हैं।

देश में प्रधानमंत्री के पद पर इंदिरा गाँधी और राष्ट्रपति के पद पर द्रौपदी मुर्मु, प्रतिभा देवी सिंह, मुख्यमंत्री के रूप में श्रीमती शीला दीक्षित, जयललिता, ममता बैनर्जी, मायावती, कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में सोनिया गाँधी, सशक्त सांसदों में श्रीमती सुषमा स्वराज व श्रीमती मीरा कुमार का नाम तो शामिल है लेकिन दूसरी अन्य महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार आज भी जारी है। हमें इसी दिशा में समानता के प्रयास करने हैं। समानता की इस जंग में हमें हर महिला को शिक्षित करना है। साक्षरता दर में महिलाएं आज भी पुरुषों से पीछे हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार महिलाओं की साक्षरता दर में 12% की वृद्धि जरूर हुई है, लेकिन केरल में जहाँ महिला साक्षरता दर 92% है वहीं बिहार में महिला साक्षरता दर अभी भी 53.3% है।

दिल्ली महिला आयोग की सदस्य रूपिन्दर कौर कहती हैं कि बदलाव तो अब काफी दिख रहा है। पहले जहाँ महिलाएं घरों से नहीं निकलती थी, वहीं अब वे अपने हक की बात कर रही हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलत राम कॉलेज में सहायक प्रोफेसर डॉ. मधुरेश पाठक मिश्र कहती हैं "कॉलेजों में लड़कियों की संख्या देखकर लगता है कि अब उन्हें अधिकार मिल रहे हैं लेकिन एक शिक्षिका के तौर पर जब मैंने लड़कियों में खासकर छोटे शहर की लड़कियों में, सिर्फ विवाह के लिए ही पढ़ाई करने की प्रवृत्ति देखी तो यह काफी हैरान करने वाली बात है आज भी मानसिकता पूरी तरह बदली नहीं है। हमें इस दिशा में अभी और प्रयास

करने होंगे।

ये हमारे देश भारत की महानता है कि सर्वोच्च पदों पर महिलाएं आसीन हैं। हमारे देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू महिला समानता की बड़ी मिसाल हैं। बच्चों के निधन के बाद पति को खोने का गम सहने वाली द्रौपदी मुर्मू ने परिस्थितियों से हार नहीं मानी बल्कि देश सेवा में अपना जीवन लगा दिया। भारत सरकार की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भी आज देश की दमदार महिला राजनीतिज्ञों में शामिल हैं। भारत ही नहीं, विदेशों तक सीतारमण का नाम मशहूर है। इसी प्रकार फ्लाइट लेफ्टिनेंट शिवांगी सिंह, मीरा बाई चानू आदि भारत की कामयाब महिलाओं की श्रेणी में शामिल हैं।

इतनी महान विभूतियों के बावजूद कुछ चौंकाने वाले तथ्य हमारे सामने आते हैं :–

पुरुष सी.ई.ओ की तुलना में महिला सी.ई.ओ की सैलरी 45% कम है। तीन सेनाओं के कुल सैनिकों में महिलाओं की हिस्सेदारी सिर्फ 07% है। देश की कुल महिला आबादी में सिर्फ 22% कामकाजी महिलाएं हैं।

हमारे यूनियन बैंक में भी कामकाजी महिलाओं का प्रतिशत काफी कम है और यह प्रतिशत उच्च वेतनमान तक पहुँचते–पहुँचते और भी कम हो जाता है।

वेतनमान I में जहाँ 6250 महिलाएं कार्य कर रही हैं वहीं वेतनमान VII तक यह संख्या मात्र 02 की है। हमारी नई अध्यक्ष एव प्रबंध निदेशक महोदया श्रीमती ए. मणिमेखलै ने इस दिशा में पहल करते हुए 'इम्पॉवर हर' ग्रुप की शुरूआत की है जिसमें महिला अधिकारियों को उच्च वेतनमानों तक प्रमोशन लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिए पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा और वहाँ की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा। जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिला समानता के सपनों को साकार करने के लिए महिलाओं को शिक्षित करना आवश्यक है, सशक्त करना आवश्यक है। चूँकि एक बेहतर शिक्षा की शुरूआत बचपन से घर पर हो सकती है, महिलाओं के उत्थान के लिए एक स्वस्थ परिवार की जरूरत है जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है क्योंकि :–

सजग, सचेत, सबल, समर्थ, ये आधुनिक युग की नारी है। मत मानों अब अबला उसको, ये सक्षम है, बलधारी है। उपसंहार जिस तरह से भारत सबसे तेजी से आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हुआ है, उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। जब महिला सशक्त होगी तभी समानता प्राप्त कर पाएगी।

अंत में निम्न शब्दों के साथ विराम देना चाहूँगी–

"मैं अबला नहीं हूँ, दबी हुई पहचान नहीं हूँ।
मैं सीमा से हिमालय तक हूँ, खेलों के मेंदानों में हूँ।
मैं लेखक हूँ, कवियित्री हूँ, बिजनेस लेडी, व्यापारी हूँ
मैं आधुनिक नारी हूँ।

ये आधुनिक नारी हर तरह से सक्षम है, सबल है। जरूरत है सिर्फ समानता की, जो हमें देनी है।

❒❒❒

चौखट पर आज...

पवनीत कौर
उप प्रबंधक
मंडल कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली

सबसे नाते–रिश्ते तोड़ आयी हूँ
इस चौखट पर आज भी परायी हूँ
वक्त बीता पर समझ नहीं पायी हूँ।
न दिल की कसक होंठों पे लायी हूँ
हर घड़ी आपके लिए मुस्करायी हूँ
हर घूँट कड़वा या मीठा पी जाती हूँ
बस आपके गुस्से से आहत हो जाती हूँ।
जीना मुश्किल होता है जी नहीं पाती हूँ
आपके कड़वे बोलों को झेल नहीं पाती हूँ
मन में कई पन्नों का खत लिखती जाती हूँ
किसको बताऊँ? खुद समझ नहीं पाती हूँ।

मायके से तो कब का नाता तोड़ लिया था
बचपन के दोस्तों को तभी छोड़ दिया था
तुम्हारी इस बेरुखी से जो आहत हो रही हूँ
मन के पन्नों पर अपनी बेचैनी लिख रही हूँ।
कभी मुझे पढ़ सकोगे, आस दिल में आती है
मेरे आँसुओं से ही मेरी चिट्ठी धुल जाती है
तुम्हारे पढ़ने के इंतजार में लिख रही हूँ
सिर्फ जिंदा हूँ, पर मुस्कुराती दिख रही हूँ।

लोकल के लिए वोकल के मंत्र से देश की आर्थिक प्रगति

स्मृति अरोड़ा
सहायक महाप्रबंधक,
आईएफसीआई लिमिटेड,
नई दिल्ली

''वोकल फॉर लोकल या लोकल के लिए वोकल'' महज एक नारा नहीं है। यह देश के उद्योग–धंधों को आगे बढ़ाने, रोजगार छूटने की आशंकाओं से सहमे लोगों और अर्थव्यवस्था को संभालने का ऐसा मंत्र है, जिसकी सार्थकता पर संदेह नहीं किया जा सकता। स्वदेशी को प्रोत्साहन देकर देश को आत्मनिर्भर बनाने की रणनीति में बापू के महान विचारों की महक भी समाहित है। 'वोकल फॉर लोकल' भारतीय अर्थव्यवस्था के वृक्ष के लिए आधार स्तंभ का काम करेगा, भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था को अग्रणी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। 'वोकल फॉर लोकल' का मतलब यह है कि जहाँ जो चीज आवश्यक हो, वहीं बनाई जाए और जो वस्तु जहाँ बन रही, हो वहीं काम में भी ली जाए। 'वोकल फॉर लोकल' अर्थव्यवस्था का पुराना पैमाना है परंतु आधुनिक युग में भी सबसे सरल और सर्वोत्तम है। दूसरे, देश की आर्थिक नीतियों के दबाव से बचने के लिए 'वोकल फॉर लोकल' न केवल कारगर है, बल्कि इसके दम पर सारी समस्याओं से निजात पाकर आगे बढ़ा जा सकता है। जीडीपी का उत्प्रेरक है 'वोकल फॉर लोकल'। स्थानीय कच्चे माल का उपभोग कर विभिन्न नए–नए उत्पादों के निर्माण और उनकी मार्केटिंग से देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती जाएगी और देश की जीडीपी में निश्चित ही वृद्धि होगी। विकसित ई–मीडिया के दम पर, त्वरित गति विज्ञापन से, स्थानीय उत्पादों की खपत भी गाँवों–शहरों में बढ़ेगी। निजी क्षेत्र की उत्पादन इकाइयों से ही देश की अर्थव्यवस्था को 'वोकल फॉर लोकल' का सम्बल मिल सकता है।

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना संकट में देशवासियों को बड़ा मंत्र दिया है, अर्थव्यवस्था के साथ–साथ देश को कोरोना मुक्त रखने का आत्मनिर्भरता का मंत्र। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने इस नए संकल्प के साथ एक विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा की। यह आर्थिक पैकेज, 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की अहम कड़ी के तौर पर काम कर रहा है। आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सिद्ध करने के लिए, इस पैकेज में लैंड, लेबर, लिक्विडिटी और लॉ सभी पर बल दिया गया है। ये आर्थिक पैकेज हमारे कुटीर उद्योग, गृह उद्योग, हमारे लघु–मंझौले उद्योग के लिए है, जो करोड़ों लोगों की आजीविका का साधन है, जो आत्मनिर्भर भारत के हमारे संकल्प का मजबूत आधार है।

समय ने हमें सिखाया है कि लोकल को हमें अपना जीवन मंत्र बनाना ही होगा। आज जो ग्लोबल ब्रांड लगते हैं, वो भी कभी ऐसे ही लोकल थे, जब वहाँ के लोगों ने उनका इस्तेमाल और प्रचार शुरू किया और उनकी ब्रांडिंग की, उन पर गर्व किया तो वे प्रोडक्ट्स लोकल से ग्लोबल बन गए। इसलिए, आज से हर भारतवासी को अपने लोकल के लिए वोकल बनना है, न सिर्फ लोकल प्रोडक्ट्स खरीदने हैं, बल्कि उनका गर्व से प्रचार भी करना है। इसकी मिसाल है, हमारा खादी ग्राम उद्योग। बहुत ही कम समय में खादी और हैंडलूम की बिक्री रिकॉर्ड स्तर पर पहुँच गई है। उसे आपने बड़ा ब्रांड बना दिया। बहुत छोटा सा प्रयास था, लेकिन, बहुत अच्छा परिणाम मिला।

'वोकल फॉर लोकल' से उत्पादन केंद्र पर ही उपभोग होने से, रोजगार बढ़ेंगे, आधारभूत संसाधनों सड़क, परिवहन अन्य पर दबाव कम होगा, उत्पादित माल खराब कम होगा और विकास केंद्रित न होकर सभी क्षेत्रों में समान रूप से होगा। इससे गाँवों से शहरों की ओर होता पलायन भी रुक जाएगा और गाँवों की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी। परिणामतः देश में सरकार को अन्य विकास कार्यों के लिए अधिक धन, आधारभूत संसाधन व समय भी मिलेगा। लोकल उत्पाद को उचित मूल्य मिलेगा तभी यह अर्थव्यवस्था के लिए प्रभावी होगा। यह रोजगार व नौकरियों की कमी को भी दूर करेगा।

जिस तरह देश में आज बहुत से स्टार्टअप और लोकल वस्तुओं का चलन हो रहा है इसका असर भविष्य में देखने को मिलेगा। अगर सभी भारतीय लोकल वस्तुओं का इस्तेमाल करने लग जाएं तो जो विदेशी कंपनियाँ कमाई का एक हिस्सा ले जाती हैं वह हिस्सा अपने देश में ही रह जाएगा। इससे आने वाले समय में देश की अर्थव्यवस्था को काफी फायदा होगा। लघु एवं छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे गरीब व मध्यम वर्ग तथा मजदूर वर्ग के लोगों को आगे बढ़ने में प्रोत्साहन मिलेगा और यह अर्थव्यवस्था के लिए कारगर सिद्ध होगा।

'वोकल फॉर लोकल' का मंत्र देश की अर्थव्यवस्था और स्वदेशी से स्वावलंबन का प्रभावी तंत्र साबित हुआ है।

स्वदेशी आह्वान के माध्यम से हैंडलूम–हैंडीक्राफ्ट के क्षेत्र में भारत की पुश्तैनी विरासत को भी प्रोत्साहन मिला है और 'हुनर हाट' के जरिये दस्तकारों, शिल्पकारों, कारीगरों ने 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को शक्ति दी है। इसका सबसे अधिक प्रभाव कोरोना काल में विश्व की आर्थिक तंगी के दौरान पड़ा, जब स्वदेशी उत्पादनों ने भारतीय जरूरतों और अर्थव्यवस्था के 'सुरक्षा कवच' का काम किया। साथ ही इसके माध्यम से दस्तकारों, शिल्पकारों और उनसे जुड़े लोगों को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर मुहैया कराने में सफलता मिली है।

'वोकल फॉर लोकल' अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योग धंधों की हिस्सेदारी बढ़ाने का कारगर साधन साबित हो सकता है। 'वोकल फॉर लोकल' से आम स्तर पर विनिर्माण के अवसर पैदा होंगे और रोजगार की ज्वलंत समस्या का समाधान भी होगा। देश में निजी क्षेत्र में रोजगार पैदा होना, जो आज निस्संदेह देश व अर्थव्यवस्था के लिए किसी चमत्कार रूपी संजीवनी से कम नहीं होगा। 'वोकल फॉर लोकल' जैसी अवधारणा अमीर–गरीब की एक असीमित खाई को पाटने का काम भी करेगी। आम जन को महंगाई से निजात मिलेगी और कम समय में उचित कीमत पर सही मूल्य उनको मिल सकेगा। सामान्य श्रम शक्ति का उपयोग अर्थव्यवस्था में एक नई ऊर्जा प्रदान कर सकता है।

वोकल फॉर लोकल' अर्थव्यवस्था का मॉडल हमारे लगभग टूट चुके कुटीर उद्योग, गृह उद्योग, मध्यम तथा लघु उद्योग को पुनर्जीवन प्रदान कर स्थानीय भूमि, पूँजी, श्रम व साहस के संतुलन व स्थानीय संसाधनों का उचित विदोहन कर बेरोजगारी के दबाव को दूर कर, स्थानीय जरूरतों की पूर्ति कर, प्रदूषण मुक्त भारत की अवधारणा को साकार करने में कारगर होगा, अर्थात यह मंत्र आत्मनिर्भर व स्वावलंबी भारत की नींव को मजबूत करने में सहायक सिद्ध होगा।

❑❑❑

जमना की सबसे बूढ़ी मछली

(कोरोना महामारी से बचाव हेतु निरंतर लॉक डाउन के दौरान भारत की लगभग सभी नदियों में न केवल जल–स्तर और स्वच्छता की वृद्धि देखी गयी, अपितु समस्त प्राकृतिक वातावरण में शुद्धता के साथ एक नई उर्जा का आगमन भी अनुभूत किया गया. यह कविता इसी आशय को अभिप्रेत करती है)

(अभीक सिंह)
मुख्य प्रबंधक सुरक्षा
प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली

जमना की सबसे बूढ़ी मछली
गलफरे फुला–फुला कर नाच रही है
उसकी नन्ही रंग बिरंगी संततियां
फुदकियां लेतीं साफ़ पानी में
प्रकृति का आनंद उलीच रही है
नथुना भर पानी की हवा खींच रही है
शैवाल फिर से हरे दिखने लगे हैं
छोटे–छोटे पादपों की नन्ही अरुणाई पर
हरीतिमा फिर से पसर आई है
बरसों बाद कछुओं की पीठ पानी से चिकनाई है
अम्लीय दलदल के भीतर
जाने कब से एक नदी छुपी रो रही थी
मनुजता का भार ढो रही थी।

जमना की सबसे बूढ़ी मछली
पानी में नई–नई उठती उर्मियों को देख,
अभी–अभी जन्म ली हुई, नवजात धाराओं को देख,
साफ होते पानी की सतह पर चोंच मारते बगुलों को देख
मानो–

कह रही है हमसे
अभी तो जीना आरम्भ किया है
किन्तु इस ख़ुशी की उम्र कितनी है?
हम पीढ़ियों से तुम्हारी सभ्यता पाल रहे हैं
और तुमने हमारा हीं सर्वनाश कर दिया है।

तुम्हे स्मरण कराता हूँ पुनश्च
तुम्हारे पुरखों ने हमसे गुज़र कर हीं तुम्हारा निर्माण किया है।
हम करते हैं किन्तु तुम्हारी सभ्यता को अस्वीकार
क्योंकि तुम अब पानी सोख लेने वाले प्रेत के समान हो
तुमने एक नदी को विषाक्त दलदल बना दिया था
जो अब हमारे भाग्य से पुनः
नदी में रूपांतरित होने लगा है।

"ऑनलाइन खरीदारी करते वक्त सोच-समझ कर क्लिक करें"

श्रुति मलिक,
मुख्य प्रबंधक और संकाय सदस्य,
बड़ौदा अकादमी नई दिल्ली।

परिजन, करीबी रिश्तेदार, दादा–दादी – पोते–पोतियों, चचेरे भाई–बहनों को एक साथ देखने और दुर्गा पूजा का आनंद लेने के लिए देश के सभी हिस्सों से घर पहुँचे लोगों से भरा कोलकाता में हमारा घर। दिल्ली में रहने वाली एक बैंकर होने के नाते मैंने दुर्गा पूजा के दौरान अपने घर कोलकाता जाने के लिए अपनी अनिवार्य छुट्टियाँ जमा कर ही ली थी। जैसे ही मैंने घर में प्रवेश किया, एक प्यारा सा चेहरा दौड़ता हुआ मेरे पास आया और कहा "दीदी, देखिए, मैंने अभी एक साड़ी ऑर्डर की है जिसे मैं विजयादशमी पर पहनूँगी"। मैंने फोन पर नज़र डाली और कहा, यह तो सच में सुंदर है। तभी पापा की आवाज़, अरे यह क्या..? मुझे एक संदेश मिला है कि मेरे क्रेडिट कार्ड से 1.00 लाख रुपये कट गए हैं। हे भगवान, यह एक धोखा लगता है। एक लाख रुपया चला गया। शोर–शराबे से भरा घर ठप्प हो जाता है।

हमने तुरंत पोर्टल पर शिकायत दर्ज की www.cybercrime.gov.in और 1930 पर कॉल करके शिकायत भी दर्ज की। मैंने पापा को चिंता न करने के लिए सूचित किया क्योंकि सौभाग्य से मैंने एक साइबर बीमा पॉलिसी उनके लिए पूजा उपहार के रूप में ली थी जो उन्हें साइबर धोखाधड़ी के प्रति सुरक्षा प्रदान करती है।

मैंने पूछा, "पापा के क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल किसने और कहाँ किया था? मेरी प्यारी सी बहन ने फुसफुसाते हुए कहा, "मैंने साड़ी खरीदने के लिए पापा के क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल किया। जैसे ही मुझे बीमा कंपनी से दावा करना था, मैंने उसका फोन लिया और पूछताछ शुरू कर दी। वह दुखी और निराश थी क्योंकि उसे ऐसा लग रहा था कि उसके कारण सारी खुशी बेकार हो गई है। मैंने उसे सांत्वना दी कि घबराओ मत हमें पैसे वापस मिल जाएंगे। अब उसने अपनी कहानी सुनाना शुरू कर दिया "मैं विजयादशमी पर पहनने के लिए साड़ी की तलाश कर रही थी। मैंने कई वेबसाइटों को देखा लेकिन मुझे वह नहीं मिला जो मैं ढूँढ रही था। फिर, जब मैं अपना फेसबुक स्क्रॉल कर रही थी, तो मैंने एक सुंदर साड़ी के साथ एक विज्ञापन देखा जैसा कि मैं चाहती थी। यह एक बहुत परिचित वेबसाइट नहीं थी, लेकिन मैंने उस विज्ञापन पर क्लिक किया और इसे मम्मा को दिखाने वाली थी लेकिन तभी मुझे फोन आया कि अगर मैं 15 मिनट के भीतर साड़ी ऑर्डर करती हूँ, तो मुझे 50% छूट मिलेगी। फोन पर व्यक्ति ने मुझे एक ओटीपी देने के लिए सूचित किया जो छूट का लाभ उठाने के लिए उनकी वेबसाइट से प्राप्त होगा। मैंने भी ऐसा ही किया और साड़ी खरीदी। अब सवाल उठता है कि इस तरह की धोखाधड़ी कैसे बचें?

तब मैंने सभी को साइबर धोखाधड़ी से खुद को बचाने के लिए निम्नलिखित कुछ सुझाव दिए:

1. पॉप–अप के चक्कर में न पड़ें,
2. धोखाधड़ी वाले विज्ञापनों, ईमेल और पाठ संदेशों से सावधान रहें,
3. यदि कोई विज्ञापन या ईमेल या पॉप–अप विंडो आपको उपयोगकर्ता नाम या पासवर्ड दर्ज करने के लिए कहती है, तो ऐसा कभी न करें। इसके बजाय, अपना ब्राउज़र खोलें और सीधे साइट पर जाएं,
4. अपनी मशीनों से ऐडवेयर निकालें,
5. ऐडवेयर (Adware) आपको अधिक लक्षित विज्ञापन दिखाने के लिए आपके बारे में जानकारी एकत्र करता है। अपनी गोपनीयता बनाए रखने के लिए अपने कंप्यूटर को सभी प्रकार के एडवेयर से छुटकारा पाना सबसे अच्छा है,
6. वेबसाइटों पर एक्सेस के लिए डबल चेक करें।

जब आप किसी ऐसी वेबसाइट पर होते हैं जो HTTPS का उपयोग नहीं कर रही है, तो आपके और साइट के सर्वर के बीच जानकारी का हस्तांतरण सुरक्षित नहीं है।

व्यक्तिगत या निजी जानकारी देने से पहले दोबारा जाँचें कि आप HTTPS का उपयोग करने वाली वेबसाइट ब्राउज़ कर रहे हैं। अपने कंप्यूटर और मोबाइल उपकरणों को सुरक्षित करें।

फ़ायरवॉल साइबर रक्षा की पहली पंक्ति है – इसे सक्रिय करें। यह अज्ञात या अवैध वेबसाइटों के कनेक्शन को ब्लॉक करता है और आपको विभिन्न वायरस और हैकर्स से सुरक्षित रखेगा।

एंटी–वायरस/मैलवेयर सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करें। एंटी–वायरस सॉफ़्टवेयर स्थापित करके और नियमित रूप से अद्यतन करके वायरस को अपने कंप्यूटर को संक्रमित करने से रोकें।

मोबाइल उपकरणों के लिए, केवल विश्वसनीय स्रोतों से एप्लिकेशन डाउनलोड करें, नवीनतम ओएस अपडेट इंस्टॉल करें और अपने एप्लिकेशन अपडेट रखें। अपने वित्तीय विवरणों की रक्षा करें।

वैध बैंक या कंपनियां कभी भी किसी भी व्यक्तिगत विवरण, पासवर्ड, ओटीपी के लिए नहीं पूछेंगे या आपको किसी खाते में धन हस्तांतरित करने के लिए नहीं कहेंगे।

केवल साइबर अपराधी ही लोगों को उनके व्यक्तिगत विवरण के साथ कुछ यादृच्छिक ऑनलाइन फॉर्म भरने के लिए कहकर व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करते हैं।

साइबर इन्श्युरेन्स के माध्यम से खुद को बचाएं।

इस तरह की व्यापक योजनाएं मैलवेयर, फ़िशिंग और साइबर जबरन वसूली से लेकर पहचान की चोरी, साइबर स्टॉकिंग और तीसरे पक्ष द्वारा डेटा और गोपनीयता उल्लंघन तक सब कुछ कवर करती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात, वे वित्तीय धोखाधड़ी को कवर करते हैं।

जानिए साइबर क्राइम का शिकार होने पर क्या करें?

अंत में, यदि आप जान जाते हैं कि आप साइबर अपराध का शिकार हो गए हैं, तो आपको बैंक, साइबर सेल और स्थानीय पुलिस को सूचित करने की आवश्यकता है। यदि आप के साथ यह धोखाधड़ी हो गई है तो नीचे दिए गए चरणों का पालन करें:

1. उन बैंकों और कंपनियों से संपर्क करें जहाँ धोखाधड़ी हुई थी।
2. धोखाधड़ी अलर्ट रखें और अपनी क्रेडिट रिपोर्ट प्राप्त करें।
3. साइबर सेल या स्थानीय पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज करें।

इससे कैसे बचें?...के सरल जवाब

1. सुरक्षा के साथ नाता जोड़ो, सुरक्षा नियमों को न तोड़ो।
2. सीखो करनी अपनी रक्षा, पूरी रखो अपनी सुरक्षा।
3. एक भूल करे नुकसान, छीने खुशियाँ और मुस्कान।

साइबर सुरक्षा हर किसी की जिम्मेदारी है। इसलिए "ऑनलाइन खरीदारी करते वक्त सोच–समझ कर क्लिक करें"।

❑❑❑

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक, एसटीसी दिल्ली द्वारा विभिन्न क्षेत्रों की शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्यों हेतु आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का अयोजन।

इण्डियन ओवरसीज बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला के दौरान स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए दिल्ली क्षेत्र के सहायक महाप्रबन्धक, श्री तिलक राज जैन। साथ में दृष्टव्य हैं श्री पी जी शंकराकृष्णन एवं उच्चाधिकारीगण।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

– महावीर प्रसाद द्विवेदी

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति शील्ड प्रतियोगिता वर्ष 2021–22 : परिणाम

राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता (श्रेणी–बैंक)	
प्रथम	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय
द्वितीय	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली
तृतीय	केनरा बैंक
प्रोत्साहन	पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिम दिल्ली
प्रोत्साहन	बैंक ऑफ बड़ौदा
प्रोत्साहन	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय 1
प्रोत्साहन	इंडियन ओवरसीज़ बैंक
प्रोत्साहन	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय
प्रोत्साहन	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली

राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता (श्रेणी–वित्तीय संस्थान)	
प्रथम	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
द्वितीय	आईआईएफसीएल लि.
तृतीय	आईएफसीआई लि.
प्रोत्साहन	राष्ट्रीय आवास बैंक

राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता (श्रेणी– बीमा कंपनियां)	
प्रथम	दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि., प्र. का.
द्वितीय	दि न्यू इंडिया इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का.–2
तृतीय	दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का.–2

राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता (श्रेणी– गृह पत्रिकाएं)		
प्रथम	यूनियन महक (छमाही)	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया–मध्य
द्वितीय	दीपस्तम्भ (छमाही)	पंजाब नैशनल बैंक
तृतीय	आवास भारती (तिमाही)	राष्ट्रीय आवास बैंक
प्रोत्साहन	मेधा (वार्षिक)	भारतीय रिजर्व बैंक

राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता (श्रेणी–ई–पत्रिकाएं)		
प्रथम	एक्ज़िम स्पर्श (छमाही)	भारतीय निर्यात–आयात बैंक
द्वितीय	दिल्ली दर्पण (तिमाही)	केनरा बैंक
तृतीय	राजदीप (तिमाही)	पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्र.का.
प्रोत्साहन	सेंट्रलवाणी (तिमाही)	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

दिल्ली बैंक नराकास की छमाही पत्रिका ''बैंक भारती'' (अंक – 26 एवं 27) वर्ष 2022 में प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाओं पर पुरस्कार

बैंकिंग विषयक लेख	प्रथम	नागमणि	बैंक की लाभप्रदता में भाषा की भूमिका	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्र. का.
	द्वितीय	आशीष नैथानी	साइबर सुरक्षा	केनरा बैंक
अन्य विषयक लेख	प्रथम	डॉ. हीरा मीणा	वीरांगना महारानी दुर्गावती	दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस क. लि. क्षे. का.–II
	द्वितीय	अश्वनी कुमार गोरा	एक सच–कोरोना का भय	आईएफसीआई लि.
कहानी	प्रथम	अर्चना भारद्वाज	उपहार	आईडीबीआई बैंक लि.
	द्वितीय	ऋतु प्रकाश	नयी पहल	यूको बैंक
कविता	प्रथम	एन. आनंद	जिंदगी जीना सीख रही है	इन्डियन ओवरसीज बैंक
	द्वितीय	शीतल कुमार	उम्मीद/आशा	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षे. का. एनसीआर

दिल्ली बैंक नराकास के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता

1.	**'सामान्य ज्ञान क्विज प्रतियोगिता (वस्तुनिष्ठ) (आयोजक: इंडियन बैंक, दिल्ली दक्षिण)**	
प्रथम	आशिमा गुप्ता	यूको बैंक
द्वितीय	साक्षी मीना	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया
तृतीय	ए. एम. राजेश	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशा. का. (दिल्ली–1)
प्रोत्साहन	साक्षी कपूर	यूको बैंक
प्रोत्साहन	खेत सिंह यादव	आईएफसीआई
प्रोत्साहन	नसीब खान	भारतीय आयात निर्यात बैंक
2.	**'ऑनलाइन राजभाषा बैंकिंग एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' (आयोजक: सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय)**	
प्रथम	गरिमा तुलसियान	इंडियन बैंक, मध्य दिल्ली
द्वितीय	शक्ति यादव	केनरा बैंक
तृतीय	साजन ग्रोवर	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय
प्रोत्साहन	शिव कुमार	आईएफसीआई
प्रोत्साहन	शिवम कुमार यादव	आईएफसीआई
प्रोत्साहन	समदर्शी गौतम	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय
3.	**'बैंकिंग ज्ञान क्विज प्रतियोगिता (आयोजक: भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय–1)**	
प्रथम.	अनिरुद्ध सिंह	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, दिल्ली उत्तर
द्वितीय	अंकित भारद्वाज	भारतीय रिजर्व बैंक
तृतीय.	कुनाल अरोड़ा	भारतीय रिजर्व बैंक
प्रोत्साहन	विशाल कुमार उपाध्याय	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी दिल्ली
प्रोत्साहन	जयदीप	राष्ट्रीय आवास बैंक
प्रोत्साहन	मीना कुमारी	भारतीय आयात निर्यात बैंक
4.	**'हिंदी कहानी प्रतियोगिता' (आयोजक: पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली)**	
प्रथम	अर्चना भारद्वाज	आईडीबीआई बैंक
द्वितीय	अमृता कुमारी	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क.लि., क्षे.का.–1
तृतीय	अभिलाषा सिंह	पंजाब नैशनल बैंक, पश्चिमी दिल्ली
प्रोत्साहन	नेहा कालरा	बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र
प्रोत्साहन	स्मृति अरोड़ा	आईएफसीआई लि.

5.	"हिंदी कहानी प्रतियोगिता" (आयोजकः आईडीबीआई बैंक)	
प्रथम	अश्वनी कुमार गोरा	आईएफसीआई लि.
द्वितीय	कुमकुम गर्ग	आईडीबीआई बैंक लि.
तृतीय	ऋतु प्रकाश	यूको बैंक
प्रोत्साहन	मोनिका	बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र
प्रोत्साहन	सुनैना रेड्डी	आईडीबीआई बैंक लि.
6.	"आशु कविता लेखन प्रतियोगिता" (आयोजकः आईआईएफसीएल)	
प्रथम	विपिन कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्र. का.
द्वितीय	अर्चना भारद्वाज	आईडीबीआई बैंक लि.
तृतीय	दीपाली	आईआईएफसीएल
प्रोत्साहन	मोनिका	बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र
प्रोत्साहन	आकिब नदीम	भारतीय स्टेट बैंक
7.	"हिंदी निबंध प्रतियोगिता" (आयोजकः पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली)	
प्रथम	स्मृति अरोड़ा	आईएफसीआई लि.
द्वितीय	ऋतु प्रकाश	यूको बैंक
तृतीय	आकांक्षा मित्तल	केनरा बैंक
प्रोत्साहन	ज्योत्सना	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
प्रोत्साहन	जया मिश्रा	बैंक ऑफ़ बड़ौदा
8.	'टेबल टॉपिक प्रतियोगिता' (आयोजकः भारतीय निर्यात–आयात बैंक)	
प्रथम	ज्योति टम्टा	यूको बैंक
द्वितीय	संदीप कुमार	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, आं. का.
तृतीय	कुमकुम गर्ग	आईडीबीआई बैंक लि.
प्रोत्साहन	अनिल वाजपेयी	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क.लि., क्षे.का.–2
प्रोत्साहन	पंकज कुमार झा	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, क्षे. का.–दक्षिण
9.	'स्वरचित हिंदी कविता प्रतियोगिता' (आयोजकः पंजाब नैशनल बैंक, दिल्ली दक्षिण)	
प्रथम	संजीव निगम 'अनाम'	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का. –1
द्वितीय	मनोज कुमार चंदोला	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क. लि. क्षे.का.–1
तृतीय	सौरभ गर्ग	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिण दिल्ली
प्रोत्साहन	शैली सचदेवा	यूको बैंक
10.	'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' (आयोजकः आईएफसीआई लि.)	
प्रथम	स्मृति अरोड़ा	आईएफसीआई लि.
द्वितीय	रूपेश कुमार	आईआईएफसीएल
तृतीय	हर्षित खामासेरा	आईएफसीआई लि.
प्रोत्साहन	रेबेका	यूनाईटेड इंडिया इंश्योरेंस क. लि. क्षे.का.–1

11. 'लघुकथा लेखन प्रतियोगिता' (आयोजक: बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र)		
प्रथम	डा, सुभाष चन्द्र खोला	नैशनल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का. 1
द्वितीय	सुलेखा रानी	पंजाब नैशनल बैंक, पूर्वी दिल्ली
तृतीय	शिल्पा बंसल	इंडियन ओवरसीज बैंक
प्रोत्साहन	गुंजन यादव	इंडियन बैंक, अं. का. मध्य दिल्ली
12. 'स्वरचित हिंदी कविता लेखन प्रतियोगिता' (आयोजक: बैंक ऑफ इंडिया)		
प्रथम	टी. के. पांडेय	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया दक्षिणी दिल्ली
द्वितीय	स्वाति	बैंक ऑफ़ इंडिया
तृतीय	पंकज कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्र. का.
प्रोत्साहन	सुनील मंगल	यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया मध्य
13. 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' (आयोजक: इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, मध्य दिल्ली)		
प्रथम	मोहर सिंह मीणा	इंडियन बैंक, अं. का., मध्य दिल्ली
द्वितीय	नूपुर गुप्ता	केनरा बैंक
तृतीय	पंकज कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्र. का.
14. 'मन की बात प्रतियोगिता' (आयोजक: राष्ट्रीय आवास बैंक)		
प्रथम	अर्चना भारद्वाज	आईडीबीआई बैंक लि.
द्वितीय	उषा कैथवास	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क. लि., क्षे.का.–1
तृतीय	पूर्णिमा आर. नायडू	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशा. का.– 1
15. 'यह चित्र कुछ कहता है प्रतियोगिता' (आयोजक: केनरा बैंक)		
प्रथम	नितिन शर्मा	नैशनल इंश्योरेंस क. लि.
द्वितीय	डिम्पल गुप्ता	केनरा बैंक
तृतीय	शिल्पा बंसल	इंडियन ओवरसीज़ बैंक
16. 'चित्र देखो, कहानी लिखो प्रतियोगिता' (आयोजक: बैंक ऑफ बड़ौदा)		
प्रथम	दिव्या भाटिया	बैंक ऑफ़ बडौदा
द्वितीय	वत्सला जैन	पंजाब नैशनल बैंक, दक्षिणी
तृतीय	गणेश नारायण साहू	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षे. का. मध्य

दिल्ली बैंक नराकास द्वारा सदस्य कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए आयोजित 'ऑनलाइन राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता' के विजेता

प्रथम	ऊर्जा श्रीवास्तव	केनरा बैंक
द्वितीय	देवेन्द्र कुमार	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्र. का.
तृतीय	निखिल शर्मा	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्र. का.
प्रोत्साहन	पंकज कुमार वर्मा	बैंक ऑफ़ बडौदा
प्रोत्साहन	मोनिका गुप्ता	पंजाब एंड सिंध बैंक, प्र. का.
प्रोत्साहन	गौतम कुमार मीना	ओरिएंटल इंश्योरेंस क. लि., क्षे. का. 2
प्रोत्साहन	पूनम पुरी	भारतीय स्टेट बैंक, प्र. का. 1
प्रोत्साहन	सिद्धार्थ नवीन	इंडियन बैंक, मध्य

दिल्ली बैंक नराकास को वर्ष 2020-21 के लिए तृतीय पुरस्कार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा उत्तर–I और II क्षेत्रों के लिए आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, 2022 (अमृतसर) में दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रदत्त वर्ष 2020–21 का तृतीय पुरस्कार उप सचिव– राजभाषा, श्रीमती मीनाक्षी जौली एवं मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर, श्रीमती जहाँजेब अख़्तर से ग्रहण करते हुए महाप्रबंधक, पीएनबी, श्री संजय कांडपाल।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा उत्तर–I और II क्षेत्रों के लिए आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, 2022 (अमृतसर) में दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रदत्त वर्ष 2020–21 के तृतीय पुरस्कार का प्रमाणपत्र उप सचिव– राजभाषा, श्रीमती मीनाक्षी जौली एवं मुख्य आयकर आयुक्त, लुधियाना से ग्रहण करते हुए श्रीमती मनीषा शर्मा, सचिव, दिल्ली बैंक नराकास एवं सहायक महाप्रबंधक– राजभाषा।

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

: संयोजक :